विशेषांक

हमारा टी सी आई एल

त्रैमासिक गृह पत्रिका–अंकः 73

डॉ. कलाम की याद में...

टी. सी. आई. एल.

2015

आपके विचार

आदरणीय वखलू जी,

आपके कार्यालय की गृह -पत्रिका - 'हमारा टीसीआईएल' का संयुक्तांक 71-72 प्राप्त हुआ।

धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है और यह अंक स्तरीय रचनाओं एवं ज्ञानवर्धक जानकारी से युक्त है।

'ई-मेल अपराध', 'एकलव्य', 'दृढ़ इच्छा शक्ति', 'खुशियों के पल' रचनाएं लेख उल्लेखनीय हैं।

काव्य धारा की कविताएं आपके कार्यालय के कार्मिकों की सृजनशीलता की परिचायक हैं। इसके साथ-साथ आपके कार्यालय में आयोजित स्वच्छ भारत, हास्य कवि सम्मेलन और हिंदी पखवाड़े संबंधी जानकारी भी प्राप्त हुई। पत्रिका के संपादन कार्य से जुड़े कार्मिकों के साथ-साथ पत्रिका के उत्तम सामग्री संकलन और प्रस्तुतिकरण के लिए आपके कार्यालय के हिंदी अधिकारी श्री कपिल शर्मा बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के पुष्पित-पल्लवित होने की कामना करता हूं।

आगामी अंकों के लिए मेरी शुभकामनाएं

-गुरमीत ग्रोवर, उप महाप्रबंधक एवं कार्यालय प्रभारी, दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

महोदय,

आपकी गृह पत्रिका हमारा टीसीआईएल का संयुक्तांक 71-72 प्राप्त हुआ। पत्रिका पूर्ण रूप से राजभाषा हिंदी को समर्पित है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएं आदि काफी रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। आशा है कि भविष्य में भी हमें पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त होती रहेगी।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाओं सहित।

- अमित प्रकाश, उपनिदेशक (राजभाषा) दूरसंचार विभाग

महोदय,

आपके संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'हमारा टीसीआईएल' संयुक्तांक 71-72 सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

पत्रिका में प्रकाशित हिंदी संबंधी सभी लेख ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद व रोचक हैं। कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियों को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

आशा करती हूं कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रकार होता रहेगा। संपादन मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद

- जयश्री सबनानी, राजभाषाअधिकारी, मैकॉन लिमिटेड

महोदय,

टीसीआईएल द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक गृह पत्रिका 'हमारा टीसीआईएल' के संयुक्तांक 71-72 अंक सधन्यवाद प्राप्त हुआ। इस पत्रिका की भाषा सराहनीय है। विविध प्रकार की रचनाएं जैसे कि एकलव्य, दृढ़ इच्छा शक्ति, ये मुर्दो का शहर आदि अत्यंत स्तरीय व रोचक हैं। आपकी प्रतियोगिताओं के माध्यम से पुरस्कृत लेख स्तरीय हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से भविष्य में भी हमें आपके कार्यालय से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती रहगी।

-महिमानंद भट्ट, राजभाषा अधिकारी, केंद्रीय भण्डारण निगम

टी. सी. आई. एल.

हमारा टी सी आई एल

अक्टूबर, 2015 (गृह पत्रिका) अंक: 73

संरक्षक:
विमल वखलू
अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक

सलाहकार:
अजय कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)

राजेश कपूर
निदेशक (तकनीकी)

राजीव गुप्ता
निदेशक (परियोजनाएं)

संपादक मंडल:
महेंद्र कुमार यादव
समूह महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)

शिवालिनी सिन्हा
समूह महाप्रबंधक (तकनीकी)

जी. के. नन्दा
महाप्रबंधक (कारोबार विकास)

संपादक:
कपिल शर्मा
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)

सहयोग:
जसविंदर कौर, वरि. अनुवादक
रेणु मणि, पर्यवेक्षक

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक का संदेश	2
संपादकीय	3
डॉ कलाम के सपनों का भारत	4-5
300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाना	6-14
जब मैंने डॉ. कलाम से भेंट की	15
भारत रत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	16-19
स्मृतियां	20-21
डॉ कलाम और 2020 विकसित भारत कार्यक्रम	22-23
एक व्यक्तित्व जो हम सभी के लिए अनुकरणीय है	24-25
डिजिटल इंडिया और इसका महत्व	26-27
जोखिम प्रबंधन और संगठन में इसका महत्व	28-34
टीसीआईएल की सफलता गाथाएं टीसीआईएल की उपलब्धियां	35-38
टीसीआईएल में हिंदी पखवाड़ा -2015 पुरस्कार वितरण समारोह	39-40

संपर्क सूत्र:
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)
टी सी आई एल भवन, दूसरा तल,
ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110 048
दूरभाष: 011-26202215
फैक्स: 011-26242266
ई-मेल: kapil.sharma@tcil-india.com
वेबसाइट: www.tcil- india.com

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों को अपने हैं, टीसीआईएल प्रबंधन का इनसे सहमत होना जरूरी नहीं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

टीसीआईएल की गृह पत्रिका 'हमारा टीसीआईएल' के माध्यम से टीसीआईएल के सभी सदस्यों के साथ विगत कई वर्षों से विचार विनिमेय होता आ रहा है।

टीसीआईएल का यह अंक उस महान आत्मा को समर्पित है जो 27 जुलाई, 2015 को हम सभी को हमेशा के लिए छोड़कर इस दुनिया से विदा हो गए। डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन हम सभी के लिए एक प्रेरणा गाथा है। श्रीमद् भागवत गीता में लिखा है कि कर्म किए जा और फल की इच्छा मत कर। मैं समझता हूं इस पंक्ति को डॉ. कलाम से अधिक और किसी ने चरितार्थ नहीं किया है। हमने अक्सर देखा है कि लोग अपने साथियों व कनिष्ठ कर्मियों द्वारा अपने कर्त्तव्यों का भलिभांति निर्वाह न किए जाने के कारण हतोत्साहित हो जाते हैं या फिर कर्तव्यों से जुड़े कठिन मार्ग को त्याग कर एक सरल विकल्प ढूंढते रहते हैं जहां उन्हें लगता है कि मीठी-मीठी बातों या चापलूसी के बल पर वे आसानी से आगे बढ़ते रहेंगे। दोस्तो, यह तरीका सही नहीं है। सफलता का मार्ग केवल और केवल कठिन परिश्रम से होकर ही गुजरता है। डॉ. कलाम का यह वाक्य हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है, 'यदि हम अपने कर्तव्यों को सलाम करते हैं तो फिर हमें किसी और को सलाम करने की आवश्यकता नहीं है। 'इस अंक के माध्यम से टीसीआईएल के मेरे साथियों ने डॉ. कलाम से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य, अपने संस्मरण और विचार रखे हैं। आशा है, पाठकों को ये विचार प्रेरित करेंगे।

विश्व का प्रत्येक देश अपनी भाषा पर गर्व करता है। देश की सर्वांगीण उन्नति तथा अटूट एकता के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। भारत की आज़ादी के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले देशभक्तों ने यही कहा था कि हिंदी ही भारत की जनभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा बन सकती है। मेरा भी यही मानना है कि हिंदी समस्त भारतवासियों को एकजुट रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है और निभाती रहेगी। बस, आवश्यकता यही है कि हम हिंदी पर गर्व करें, कार्यालयी कार्य करते हुए हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

विमल वखलू

विमल वखलू

संपादकीय

किसी भी देश का तीव्र गति से विकास तभी होता है जब उस देश के समस्त देशवासी देश के विकास में अपना योगदान दें। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक नागरिक को शिक्षा दी जाए, उसकी रुचि के अनुसार उसे कला, विज्ञान वाणिज्य या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया जाए तो वह व्यक्ति अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सकेगा।

यदि किसी देश में शिक्षा के लिए पर्याप्त विद्यालय न हों और विद्यालयों में शिक्षा किसी विदेशी भाषा में दी जाती हो तो सभी बच्चे शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते और योग्य नागरिक नहीं बन सकते। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए ताकि विषय का ज्ञाता बनने के लिए उसे भाषा का ज्ञाता बनने का अतिरिक्त प्रयास न करना पड़े। हमारी शिक्षा व्यवस्था पर नज़र डालें तो शायद ही कोई ऐसे अभिभावक हों जो अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने की अभिलाषा न रखते हों। हिंदी माध्यम के स्कूलों में वही बच्चे पढ़ते हैं, जो इन अंग्रेजी स्कूलों में आर्थिक विवशता या किसी अन्य कारण से दाखिला नहीं ले पाते। लेकिन जिन्होंने अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में जैसे-तैसे अपने बच्चों को दाखिला दिलवा दिया है, उन्हें भी यह कतई नहीं मान लेना चाहिए कि उनके बच्चे बड़े होकर अब निश्चित रूप से 'सैटल' हो जाएंगे।

सच तो यह है कि ऐसे अधिकांश बच्चे अंग्रेजी से सामंजस्य बिठाने में कठिनाई अनुभव करते हैं क्योंकि घरों में कोई अंग्रेजी नहीं बोलता और स्कूल में उन बच्चों के सामने हीन अनुभव करते हैं जो अंग्रेजी धाराप्रवाह बोलते हैं। जब परीक्षाएं आ जाती हैं तो प्रश्नों के उत्तरों को रटते हैं और जितना याद रहता है, उतना उत्तर में लिख आते हैं। विषय के ज्ञान की बात तो बहुत दूर है। क्या हम ऐसी शिक्षा व्यवस्था पर गर्व कर सकते हैं?

मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हमारे देश के यदि सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाती तो देश के विकास की शक्ल कुछ और ही होती। अंग्रेजी ने समाज में एक ऐसा वर्ग पैदा कर दिया है जिसे न तो अपनी भाषा का ज्ञान है और न ही वे अंग्रेजी भाषा पर दक्षता का दावा कर सकते हैं। हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। समय आ गया है कि देश की शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के बड़े स्तर पर प्रयास किए जाएं। क्योंकि यदि ऐसा नहीं किया गया तो हिंदी को हम कभी भी वह स्थान नहीं दिला पाएंगे, जिसकी वह हकदार है।

कपिल शर्मा

कपिल शर्मा

डॉ. कलाम के सपनों का भारत

डॉ. अवुल पाकिर जैनुअलअबेदिन अब्दुल कलाम जिन्हें भारत का मिसाइल मैन भी कहा जाता है, गणतंत्र भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। वे पूर्ण बहुमत (लगभग 90 प्रतिशत मत) के साथ निर्विवाद रूप से भारत के राष्ट्रपति चुने गए। 18 जुलाई 2002 में उन्होंने राष्ट्रपति पद पर कार्यभार ग्रहण किया और 25 जुलाई 2007 तक वे इस पद पर बने रहे। कार्यकाल समाप्त होने के बाद उन्होंने भारतीय प्रबंधन संस्थान (अहमदाबाद और शिलांग) आदि में व्याख्यानदाता रहते हुए कई महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए।

सादा जीवन उच्च विचार के मूल्यों को चरितार्थ करने वाले डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम में एक साधारण मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पंचायत के प्राथमिक विद्यालय से प्रारंभ हुई। डॉ. कलाम ने वर्ष 1958 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उनके जीवन पर उनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। उनके पिता, जो यद्यपि अधिक शिक्षित नहीं थे, मछुआरों को नाव किराए पर देने का काम करते थे। बचपन में आर्थिक तंगी के कारण डॉ. कलाम को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए अत्यंत संघर्ष करना पड़ा। अखबार बेचने जैसे छोटे-मोटे कार्य करते हुए वह किसी तरह अपनी आजीविका के माध्यम से अपनी शिक्षा जारी रखे हुए थे। अंततः पढ़ाई पूरी करने के उपरांत वे वर्ष 1962 में इसरो में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं पर कार्य किया। कई परियोजनाओं पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए उन्होंने अग्नि और पृथ्वी नामक मिसाइलों को विकसित किया जो पूर्णतया भारतीय तकनीक के बल पर विकसित की गई थी। अपनी आत्मकथा 'विंग्स ऑफ़ फ़ायर' में उन्होंने इन सभी का विस्तार से वर्णन किया है।

अपनी उपलब्धियों के लिए डॉ. कलाम को 1981 में पद्मभूषण, और 1990 में पद्मविभूषण और 1997 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। भारत रत्न से सम्मानित किए जाने वाले वे भारत के तीसरे राष्ट्रपति हैं। वर्ष 1998 में उन्हें वीर सावरकर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें 40 विश्वविद्यालयों से मानद डायरेक्टरेट की उपाधियां भी प्राप्त थी। 27 जुलाई 2015 को यह महान शख्सियत इस दुनिया से विदा हो गई। डॉ. कलाम ने अपनी पुस्तक 'इंडिया 2020-अ विज़न फॉर न्यू मिलेनियम' में बताया था कि अनके सपनों का भारत कैसा होगा।

डॉ. कलाम को यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा एक छोटी बच्ची से मिली जिससे उन्होने पूछा कि उसके जीवन का क्या लक्ष्य है तो उनका जवाब था विकसित भारत में जीवन यापन करना। केवल अंतरिक्ष विज्ञान ही नहीं, बल्कि प्रत्येक महत्वपूर्ण क्षेत्र में विकसित हो चुके भारत का सपना उन्होंने देखा और इस सपने को 2020 तक पूरा करने की एक कार्ययोजना बनाई। उनका यह भी मानना था कि सॉफ़्टवेयर के क्षेत्र को हर बाधाओं से मुक्त होना चाहिए ताकि इसकी उपयोगिता का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को मिले। सरल शब्दों में कहें तो डॉ. कलाम वर्ष 2020 तक भारत को विश्व की चार महाशक्तियों की कतार में खड़ा देखना चाहते थे। वे कहते थे कि प्राचीन काल से भारत ज्ञान के क्षेत्र में एक महाशक्ति रहा है पर अब समय आ गया है कि ज्ञान की इस शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग करते हुए भारत का चहुंमुखी विकास किया जाए। उनका मानना था कि केवल मेरे अकेले के स्वप्न से यह कार्य

संभव नहीं है और यह स्वप्न प्रत्येक भारतीय को देखना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए अपना हरसंभव योगदान देना चाहिए।

लगभग 300 पृष्ठों की इस पुस्तक में उन्होंने 12 महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला है जो निम्नलिखित है.

1. अन्य देशों ने अपने लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किए हैं?
2. प्रौद्योगिकी का क्रमिक विकास-विज़न 2020
3. खाद्य, कृषि एवं संसाधन
4. सामग्रियां और इनका भावी उपयोग
5. रसायन संपदा
6. रसायन उद्योग और हमारा जैविक स्वास्थ्य
7. भविष्य के लिए विनिर्माण
8. जनसेवाएं-एक अमूल्य संपदा
9. सामरिक उद्योग
10. सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं
11. अवसंरचनात्मक क्षमता
12. गहन अध्ययन कैसे करें
13. भारत वर्ष 2020 तक एक विकसित राष्ट्र कैसे बनेगा

डॉ. कलाम का कहना था कि 'सपने वो नहीं होते जो सोने पर आते हैं, बल्कि सपने वो होते हैं जो सोने नहीं देते हैं'। उन्होंने प्रौद्योगिकी को ऐसा ईंधन माना जिससे देश के विकास रूपी वाहन को ऊर्जा और गति मिलती है। यही कारण है कि उन्होंने सदैव ही अर्थव्यवस्था में बजट का एक बड़ा हिस्सा उच्च शिक्षा और विशेषकर तकनीकी शिक्षा पर खर्च करने की वकालत की। अपनी इस पुस्तक में भी उन्होंने प्रक्षेपण यानि मिसाइल तकनीक, सिस्टम इंजिनियरिंग, सिस्टम इंटीग्रशन, वायुयान सिस्टम आदि तकनीकों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। डॉ. कलाम का कहना था, 'बारिश में पक्षी अपना आसरा ढूंढते हैं पर गरूड़ बारिश की परवाह किए बिना ही उड़ता रहता है और अपनी उड़ान इतनी ऊंची कर लेता है कि बादलों के पार निकल जाता है। वे यह भी कहते थे कि सूर्य की तरह चमकना है तो पहले उसकी तरह तपना सीखो।

डॉ. कलाम ने हमेशा से ही यह माना कि इंसान जब तक जीवित है, उसे काम करते रहना चाहिए। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी वह शिलांग के एक शैक्षिक संस्थान में व्याख्यान दे रहे थे। डॉ. कलाम, जिन्होंने भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखने का स्वप्न संजोया था, इसके लिए वर्ष 2020 का लक्ष्य स्थापित किया था। भले ही आज डॉ. कलाम हमारे बीच नहीं हैं पर यह लक्ष्य अधूरा नहीं रहना चाहिए और इसे पूरा करना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए। आइए, प्रण लें कि जब तक हम उनके स्वप्न को पूरा नहीं करेंगे, चैन की सांस नहीं लेंगे। मेरा यह आलेख यदि किसी एक भी पाठक को प्रेरित कर सका तो इसे मैं अपनी विजय मानूंगी। अंत में डॉ. कलाम की ही एक कविता के हिंदी अनुवाद के साथ मैं इस आलेख का समापन करती हूं:

ज्ञान का दीप जलाए रखूंगा,
हे भारतीय युवक,
ज्ञानी-विज्ञानी,
मानवता के प्रेमी,
संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य की लालसा पाप है,
मेरे सपने बड़े है, जिन्हें पूरा करने के लिए,
मैं बड़ी मेहनत करूंगा,
मेरा भारत महान हो, यह प्रेरणा का भाव अमूल्य है,
इसी धरती पर दीप जलाऊंगा, ज्ञान का दीप जलाए रखूंगा,
जिससे मेरा भारत महान हो, मेरा भारत महान हो।

- किरण वकाडीकर

यदि सफल होने का मेरा संकल्प सशक्त है तो असफलता मुझे कभी परास्त नहीं कर सकती।
-डॉ. कलाम

“300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाना”

डॉ. कलाम ने वर्ष 2012 में अपने टीसीआईएल दौरे पर उक्त विषय पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसका अनुवाद यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के परस्पर सहयोग को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी आधारित पहल के तौर पर अफ्रीकी महाद्वीप के सभी देशों को भारतीय शिक्षा और स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं प्रदान करने के लिए भारत सरकार की एक कार्यान्वयन एजेन्सी के रूप में टीसीआईएल ने पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत 5 भारतीय विश्वविद्यालय, 12 भारतीय अति विशेषज्ञतायुक्त अस्पताल तथा टीसीआईएल भवन स्थित डेटा केंद्र एमपीएलएस नेटवर्क पर उपग्रह नेटवर्क के माध्यम से 53 अफ्रीकी देशों के साथ जुड़े हुए हैं तथा प्रत्येक अफ्रीकी देश का एक अध्ययन केंद्र, एक रोगी अंत्य अस्पताल, एक वीवीआईपी नोड है। टीसीआईएल डेटा सेंटर तथा डेकार, सेनेगल स्थित उपग्रह हब स्टेशन के बीच आईपीएलसी लिंक है जो भारत और अफ्रीका को जोड़ता है। इस नेटवर्क का उद्घाटन 26 फरवरी, 2009 को किया गया था भारतीय विश्वविद्यालयों तथा अति विशेषज्ञतायुक्त अस्पतालों से दूर-शिक्षा, दूर-चिकित्सा तथा सीएमई के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा है। भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा स्नातकोत्तर, स्नातकपूर्व, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है तथा 8200 से भी अधिक विद्यार्थी भारतीय विश्वविद्यालयों में पंजीकृत हो चुके हैं। प्रारंभ से अब तक 3000 से भी अधिक दूर-शिक्षा सत्र 2214 से भी अधिक सीएमई सत्र तथा 416 से भी अधिक दूर-चिकित्सा परामर्श आयोजित किए जा चुके हैं।

इस नेटवर्क से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा सेवाओं के लिए निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार सफलतापूर्वक प्रसारण किया जा रहा है।

इस नेटवर्क का प्रयोजन भारत और अफ्रीका के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा टीसीआईएल भवन स्थित पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के स्टुडियो से कला, संस्कृति, शिक्षा,और प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न क्षेत्रों से संबधित विशेष व्याख्यानों के प्रसारण का आयोजन करना भी रखा गया था। आधुनिक युग में सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए विद्यार्थी, डॉक्टर, प्रशासक तथा विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण मामलों में निर्णायक की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति उपर्युक्त सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के ज्ञान और अनुभवों का फायदा उठा सकते हैं। विशेष व्याख्यानमाला का प्रथम व्याख्यान भारत के पूर्व राष्ट्रपति तथा पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के जनक डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा दिया गया।

उनके व्याख्यान का विषय था ‘300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाना’।

300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाने का उनका व्याख्यान उनकी पुस्तक लक्ष्य 300 करोड़ (टार्गेट 3 बिलियन) पर आधारित था जिसमें अविकसित, विकासशील और

विकसित विश्व के अधिक निर्धन क्षेत्रों के निवासी 300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाने के मनोरथ पर विशेष बल दिया गया है। इन लोगों की हालत ऐसी है कि विकास के वैश्विक मॉडल के साथ उनकी प्रतिभा और संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पाता जिसके फलस्वरूप वे लोग गरीबी से निकल नहीं पाते। डॉ. कलाम के अनुसार शहरी सुविधाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराने तथा ग्रामीण क्षेत्रों को बाहरी बाज़ारों के साथ जोड़ने के लिए नवीन और पर्यावरण के अनुकूल समाधानों के माध्यम से 300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाया जा सकता है।

उनका व्याख्यान इस प्रकार है:

प्रिय मित्रों, पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क के भारतीय शिक्षा संस्थाओं में पंजीकृत विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता है। मुझे इस बात की खुशी है कि आप सब लोग भारतीय विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थाओं से स्नातक और स्नातकोत्तर, वृत्तिक तथा प्रबंधन के बहुविध पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर रहे हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क के माध्यम से लगभग 8000 विद्यार्थी भारतीय विश्वविद्यालयों से विभिन्न स्नातक, स्नातकोत्तर, वृत्तिक और भाषा पाठ्यक्रमों एवं स्वास्थ्य परिचर्या पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर रहे हैं तथा भारतीय स्वास्थ्य परिचर्या संस्थाओं से सीएमई पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर रहे हैं। अब तक 47 देश पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना से जुड़ चुके हैं। भारत के पांच विश्वविद्यालय, अफ्रीका के पांच विश्वविद्यालय तथा भारत के 12 अति विशेषज्ञतायुक्त अस्पताल और अफ्रीका के 5 अति विशेषज्ञतायुक्त अस्पताल पैन अफ्रीकी देशों को शिक्षा और स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। लगभग 47 उच्च प्रशासनिक केंदों को ई-गवर्नेन्स सेवाएं प्रदान करने के लिए जोड़ा गया है। मैं विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, पैन अफ्रीकी देशों, टीसीआईएल तथा अन्य साझेदार संगठनों, निजी उद्योगों, अकादमिक और स्वास्थ्य परिचर्या संस्थाओं को शाबासी देता हूं जिन्होंने पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क के माध्यम से मुझे आप के साथ जुड़ने का अवसर दिया। यह वास्तविकता है और बहुत से देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय सामाजिक जिम्मेदारी का जीता जागता उदाहरण है जिसे विशेषत: आज के मुश्किल दौर में अपनाया जाना चाहिए। इस क्षण, मैं आप सबके साथ हूं। मैं '300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाने' के विषय पर अपनी बात कहूंगा।

जीवन की उत्पत्ति

प्राचीन विज्ञानियों ने प्राचीन मानव इतिहास को बहुत अच्छे ढंग से अभिव्यक्त किया है। 600 मिलियन वर्ष पूर्व जीव की उत्पत्ति हुई तथा महाद्वीपीय अपसरण 200 मिलियन वर्ष पूर्व हुआ जिसके फलस्वरूप पांच महाद्वीप बने, स्तनधारी जीवों की उत्पत्ति 140 मिलियन वर्ष पूर्व हुई, मनुष्य अर्थात मनुष्य समूह की उत्पत्ति 26 मिलियन वर्ष पूर्व हुई, परंतु आधुनिक मानव की उत्पत्ति 2000,000 वर्ष पूर्व हुई। उसने लगभग 50,000 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर बस्तियां बनाई। बोली जाने वाली भाषा की उत्पति लगभग 10,000 वर्ष पूर्व तथा लिखित भाषा की उत्पत्ति केवल कुछ हजार वर्ष पूर्व हुई। यह समस्त असाधारण प्रगति 200 से 400 पीढ़ियों की अल्पावधि अर्थात 10000 से 50,000 वर्ष की अवधि के दौरान की गई है। नई डीएनए प्रौद्योगिकी ने सूक्ष्म दृष्टि से मानव इतिहास की खोज करने में बहुत मदद की है। मनुष्य के डीएनए से उसके संपूर्ण इतिहास की जानकारी मिल जाती है। बुद्धिमता, ज्ञान, नशे के प्रति अनुक्रिया, आचरण संबंधी समस्याएं, प्रत्येक जीन का संबंध जीन से है।

डीएनए प्रौद्योगिकी के नये युग में बीमारी की जीन मैपिंग तीव्र गति से प्रगति कर रही है। संभवत: 50,000 से 30,000 वर्ष के सह अस्तित्व के दौरान मानव समाज ने नए परिवर्तन और संस्कृतियां अपनाने की आदत विकसित कर ली है।

अत: इस जीन विज्ञान के युग में भी प्रकृति-पोषण का दर्शन बहुत अच्छा है। 'जीन' जो हम अपने माता-पिता से वंशानुगत रूप से प्राप्त करते हैं वह नींव (आधार) की तरह काम करते हैं जिस पर जीवन रूपी भवन बनता है, चाहे कोई व्यक्ति हो या काई अद्वितीय रचना, किसी व्यक्ति के भाग्य के निर्माण में पर्यावरण

एक निर्णायक भूमिका निभाता है और उसे उत्कृष्ट स्थिति में ले जाता है। अवसर व्यक्ति का निर्माण करता है। सभी बच्चों में महान विद्वान, महान नेता, महान वैज्ञानिक, महान अध्यापक, महान उद्योगपति और महान सामाजिक व्यवस्थापक बनने की (जन्मजात) क्षमता होती है। प्रत्येक व्यक्ति की प्रगति के लिए हमारी प्रत्येक व्यवस्था को सहयोग करना चाहिए।

आधुनिक समाज के समक्ष चुनौतियां

जीव विज्ञान की प्रगति से मनुष्य और पशु के जीनोम में समानता का ज्ञान हुआ और पता लगा कि आंतरिक और बाह्य सभी तरह के टकराव का कारण संभवत: संकुचित मस्तिष्क ही है। मानव समाज अपनी उत्पति से लेकर आज तक हमेशा आंतरिक और बाह्य युद्ध का शिकार रहा है और इसके फलस्वरूप दो विश्वयुद्ध हुए। वर्तमान में विश्व के अनेक भाग आंतकवाद और युद्धक स्थिति से आक्रांत हैं।

आज विश्व की जनसंख्या लगभग 700 करोड़ है जिसमें से केवल 300 करोड़ लोगों के पास पीने के पानी की आपूर्ति सीमित मात्रा में अथवा संभवत: संतोषजनक है। यह अनुमान है कि विश्व की 33 प्रतिशत जनसंख्या के पास सफाई की सुविधा नहीं है और 17 प्रतिशत जनसंख्या के पास स्वच्छ पानी नहीं है। वर्ष 2025 तक विश्व की जनसंख्या 800 करोड़ से अधिक हो जाएगी परन्तु 100 करोड़ लोगों के पास पर्याप्त पानी होगा, 200 करोड़ लोग अर्थात कुल जनसंख्या के 25 प्रतिशत के पास स्वच्छ पानी नहीं होगा, 500 करोड़ अर्थात कुल जनसंख्या के 62 प्रतिशत के पास सफाई की सुविधा नहीं होगी। इस समस्या का समाधान हम सबको मिलकर करना चाहिए।

जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से पर्यावरण की अनेक समस्याएं पैदा हो गई है जिसके फलस्वरूप जलवायु में असामान्य परिवर्तन आ गए हैं। इसके फलस्वरूप शोधकर्ता स्वच्छ ऊर्जा स्त्रोतों की खोज में जुटे हैं जैसे हाइडल पावर प्लांट, परमाणु विद्युत संयंत्र, नवीकरणीय स्त्रोतों से ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन तथा ज्वारीय ऊर्जा। परिवहन क्षेत्र में भी उत्तरोत्तर रूप से बायोडीजल तथा इथानोल का प्रयोग शुरू करना जरूरी है। स्वास्थ्य परिचर्या क्षेत्र में खतरनाक बीमारियां जैसे एचआईवी / एड्स, कैंसर, टी, बी, मलेरिया, पानी से होनेवाली अन्य बीमारियां तथा हृदय रोग बहुत अधिक बढ़ गए हैं। सभी मोर्चों पर आदमी जीवन की जंग लड़ रहा है - एक तरफ आतंकवाद से और दूसरी तरफ बीमारियों तथा पर्यावरण प्रदूषण से।

वैश्विक चुनौतियां

प्रिय मित्रों, विश्व के समक्ष आज - गरीबी, निरक्षरता, पीने का स्वच्छ पानी, स्वच्छ व प्राकृतिक ऊर्जा, संसाधनों का समान वितरण सभी के लिए नैतिक मूल्यों युक्त उत्तम शिक्षा, युवाओं में नियोजनीयता, बढ़ते हुए सामाजिक असंतुलन, बीमारियों का उपचार,सभी के लिए उतम स्वास्थ्य परिचर्या तथा अच्छे रहन-सहन की चुनौतियां हैं।

इन चुनौतियों का समाधान निकालने के लिए प्रत्येक देश कोशिश कर रहा है। हमें यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि विभिन्न देशों द्वारा जिन चुनौतियों का सामना किया जा रहा है वे उनके द्वारा पैदा नहीं की गई है और उनका समाधान कोई एक देश नहीं कर सकता। कारणों और समाधानों के अनेक अंतरराष्ट्रीय आयाम हैं। इसलिए समाधानों के लिए कार्य करना वैश्विक समुदाय की सम्मिलित जिम्मेदारी है। जब सभी देश निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य परिचर्या आदि सार्वनिष्ठ शत्रुओं को समाप्त करने के लिए कार्य करेंगे तो राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक शांति पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी प्रवृति बेहतर पारस्परिक विश्वास के साथ उभर कर सामने आएगी। वैश्विक चुनौतियां स्थनीय गतिविज्ञान (गतिविधियों) के आधार पर विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती हैं जो विभिन्न घटकों से परस्पर जुड़ी होती हैं।

आइए इन अभिव्यक्तियों के गति विज्ञान पर नजर डालें:

वैश्विक अभिव्यक्तियों का गति विज्ञान

विश्व आज समग्रत:चार तीव्र संयोजिताओं के माध्यम से संबद्ध है। ये चार है - पर्यावरण, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था तथा विचार। हम सभी जानते हैं कि वैश्विक

ऊष्णता तथा जलवायु परिवर्तन अब किसी एक देश की समस्या नहीं है अपितु अब ये समस्याएं समस्त भूंमडल की हैं। आज के युग में कई महाद्वीपों से आयातित घटकों से एक उत्पाद बनाया जा सकता है और उस उत्पाद को उसके निर्माण स्थल से बहुत दूर बाजारों में प्रयोग किया जा सकता है। हमने यह भी देखा है कि विश्व के एक भाग में पैदा हुई आर्थिक अस्थिरता ने पूरे विश्व को हिला कर रख दिया। आज दुनिया के सामने बढ़ती हुई मुद्रा स्फीति का दबाव, मंदी और विकास दर में भारी गिरावट की समस्याएं मुह बाए खड़ी हैं जिनका प्रभाव विकास के लिए की जा रही बहुमूल्य कोशिशों पर पड़ता है। एक द्वीप देश में ज्वालामुखी फटने से समस्त विमानन उद्योग तथा 5000 से अधिक वाणिज्यिक उड़ाने बंद हो गई और हाल ही में एक द्वीप देश में आए भूकंप और उसके बाद आई सुनामी ने सुरक्षा और बचाव की संकल्पना को बदल दिया। उसके साथ-साथ परिवहन के साधनों की उन्नति होने के फलस्वरूप एक देश से दूसरे देश में लोगों का आना जाना उतरोतर अधिक सुगम हो गया है। इससे विशेषज्ञता और प्रतिभाओं का वैश्वीकरण हो रहा है जो निर्बाध रूप से एक देश से दूसरे देश में आ जा रही हैं। इससे मानवीय बीमारियों का भी वैश्वीकरण हो रहा है। हाल ही में विभिन्न प्रकार के ज्वर जो विश्वभर में तेजी से फैले और पूरी मानव जाति के लिए खतरे की घंटी बन गए। एक द्वीप देश में हुई एक परमाणु दुर्घटना सबके सामने है जिससे पूरा विश्व चिंतित हो गया था और विश्व समुदाय ने अपने परमाणु सुरक्षा उपायों को और मजबूत किया। इसी प्रकार विचार और नए परिवर्तन अब भूगौलिक या राजनैतिक सीमाओं में नहीं रहते। विश्व में कही भी की गई कोई खोज अतिशीघ्र हजारों मील दूर अपना बाजार बना लेती है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार तथा प्रौद्योगिकीय औजारों का अभिसरण (Convergence) ज्ञान की नई संरचना कर रहे हैं जिसके अंतर्गत विश्व के अलग-अलग भागों में बसे बहुविध विशेषज्ञ विश्व के किसी एक भाग की समस्या का समाधान कर सकते हैं। सूचना और व्यक्तियों के निर्बाध आवागमन का यह भी तात्पर्य है कि स्थानीय अथवा क्षेत्रीय समस्याएं अनिवार्य: वैश्विक महत्व की बन जाएंगी तथा गरीबी जैसी उपेक्षित समस्याएं बहुत तेजी ये वैश्विक आंतकवाद में तब्दील हो सकती हैं जिसका हम पहले ही सामना कर रहे हैं। विचारों के प्रवाह से वैश्विक मानव अधिकारों का बढ़ता हुआ महत्व तथा प्रजातंत्र के विचार का प्रचार हुआ है। इस संबंध में मैं अपना एक अनुभव बताता हूं।

वैश्वीकरण: जब मैं अमरीका में एक वायुयान में यात्रा कर रहा था तो मुझे बताया गया कि वायुयान पर नियंत्रण मुख्यत: साफ्टवेयरों के माध्यम से हो रहा और इनमें से अधिकतर सॉफ्टवेयर भारत में विकसित किए गए हैं। जब मैने अपना क्रेडिट कार्ड उनके समक्ष रखा तो मुझे बताया गया कि इसको मॉरिशस स्थित अंतिम पृष्ठभाग सर्वर पर संसाधित किया जा रहा है। जब मैं बेंगलूर में एक बहुराष्ट्रीय सॉफ्टवेयर कंपनी में गया तो मैं यह जानकर मंत्रमुग्ध हो गया कि इसमें वास्तव में बहु - सांस्कृतिक परिवेश मौजूद था। एक सॉफ्टवेयर विकसित करने वाला व्यक्ति चीन का था जो कोरियाई टीम लीडर के अधीन कार्य कर रहा था। एक भारतीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर एक अमरीकी हार्डवेयर वास्तुकार तथा जर्मनी के संचार विशेषज्ञ के साथ कार्य कर रहा था और वे सभी आस्ट्रेलिया की बैकिंग समस्या का समाधान करने का कार्य कर रहे थे। जब मैने इस प्रकार उन सभी को एक परिवार की तरह मिलकर कार्य करते हुए देखा और यह देखा कि वे सब इस बात को भूलकर कि उनकी संस्कृति और भाषा अलग है, मिलकर काम कर रहे थे तो मैने महसूस किया कि इस प्रकार सीमारहित विचारों का आदान प्रदान तभी जारी रह सकता है जब हम अपनी पृथ्वी पर प्रत्येक मानवीय गतिविधि में देश, भाषा और संस्कृति की सीमाओं को मन से निकाल दें।

विकसित भारत विजन 2020 के लिए विशिष्ट रूपरेखा जिसे हमने प्रस्तुत किया है तथा विश्वभर की अनेक शिक्षा संस्थाओं और भारत तथा विदेशों के बहुविध संगठनों एवं क्षेत्रों से संबंध रखने वाले अनेक

नागरिकों के साथ उस पर हुए विस्तृत विचार विमर्श सहित उसे 2030 में विश्व के देशों के लिए विशिष्ट रूपरेखा के रूप में आपके समक्ष रखते हुए मुझे प्रसन्नता है:

2030 में विश्व के देशों के लिए विशिष्ट रूप रेखा

इन सजीव कल्पनाओं का विवरण निम्नलिखित है:

1. राष्ट्रों का एक ऐसा विश्व जिसमें ग्रामीण और शहरी, अमीर और गरीब, विकसित और विकासशील के बीच का अंतर बहुत कम हो गया है।

2. ऐसी दुनिया जिसमें ऊर्जा और उत्तम पानी का समान वितरण होगा तथा पानी सभी को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होगा।

3. ऐसा विश्व जिसमें प्रत्येक देश की मूल क्षमताएं अभिज्ञात होंगी। विभिन्न देशों की मूल क्षमताओं को विकसित करने का कार्य मिशन करेंगे जिससे अखिल विश्व के समाज को आर्थिक लाभ होगा तथा उसका विकास तेजगति से होगा।

4. ऐसा विश्व जहां विश्व समाज के सभी विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों के साथ शिक्षा प्रदान की जायेगी।

5. सभी देशों का ऐसा विश्व जहां सभी के लिए उत्तम प्रकार की स्वास्थ्य परिचर्या उपलब्ध होगी जिसका खर्च उठाना सबके लिए आसान होगा।

6. ऐसा विश्व जिसमें अभिशासन अनुकूल, निष्कपट और भ्रष्टाचारमुक्त होगा।

7. ऐसा विश्व जहां स्त्रियों और बच्चों पर कोई अत्याचार नहीं करेगा। और समाज में कोई भी अपने आप को अलग-थलग महसूस नहीं करेगा।

8. ऐसा विश्व जहां प्रत्येक देश अपने सभी नागरिकों को स्वच्छ और प्राकृतिक पर्यावरण उपलब्ध कर सकेगा।

9. ऐसा वियव जो समृद्धिशाली, स्वास्थ्य, सुरक्षित, आंतकवादरहित, शांतिपूर्ण और प्रसन्न हो तथा स्थायी विकास के पथ पर अग्रसर हो।

10. ऐसा विश्व जिसमें नेतृत्व हो, जिसके पास राष्ट्रों और समाजों के बीच विरोधों का समय पर समाधान करने के लिए प्रभावी तंत्र मौजूद हो और उसका उद्देश्य विश्व में शांति और समृद्धि बनाए रखना हो।

दो संभव समाधान

ठोस लक्ष्य (विजन) को पूरा करने के लिए दो संभव समाधान है। पहला समाधान परंपरागत अभिगम (एप्रोच) प्रतीत होता है जो विश्व में अब तक अपनाया जाता रहा है। इसकी शुरूआत स्थानीय सीमाओं और स्थानीय परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत राष्ट्रीय और समृद्धि शांति के लिए कार्यकरण से होती है, इस आशा के साथ कि लम्बे अरसे में यह क्षेत्रीय समृद्धि और शांति के रूप में फैल जायगी और अंततः इससे वैश्विक स्तर पर समृद्धि और शांति प्राप्त की जा सकती है। संपूर्ण विश्व के सामूहिक अनुभव से प्रमुख रूप से यह ज्ञात होता है कि इस समाधान से वांछित परिणाम सामने नहीं आए तथा यह निश्चित नहीं है कि वैश्वीकरण की ओर बढ़ती दुनिया में भविष्य में इससे वैश्विक समृद्धि और शांति प्राप्त की जा सकती है।

दूसरा समाधान यह है कि वैश्विक समृद्धि और शांति को सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र लक्ष्य के रूप में देखा जाए जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय समृद्धि और शांति प्राप्त होगी तथा अंततः प्रतिभागी देशों की राष्ट्रीय समृद्धि और शांति सुनिश्चित होगी। यह वैश्विक संदर्भ में किया गया अध्ययन है और इसका निष्कर्ष यह है कि किस प्रकार प्रत्येक देश वैश्विक लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। यह भी याद रखा जाना चाहिए कि राष्ट्रीय लक्ष्य नागरिकों को प्रेरित करता है, इस भावना को वैश्विक महत्व के लक्ष्यों की ओर प्रवर्तित किया जाना चाहिए।

नवीन विचारधारा 2030 में विश्व के देशों के लिए विशिष्ट रूपरेखा के अनुकूल होनी चाहिए।

आज मैं, एक लक्ष्य (विजन) पर आप सभी के साथ विस्तार से चर्चा करना चाहता हूं। यह है – विश्वभर में ग्राम और शहर के बीच विद्यमान अंतराल को कैसे कम किया जाए। मित्रों 300 करोड़ से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती और इन 300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाना मेरे आज के व्याख्यान का विषय है और हमारे बीच होने वाली चर्चा का आधार भी यही है। विश्व के ग्रामीण क्षेत्रों का सशक्तीकरण विश्व के सम्मिलित विकास, स्थायी शांति और साझी समृद्धि के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अप्रयुक्त संभाव्य ग्रामीण जनसंख्या एवं प्रतिभा, एक बहुत बड़ा खजाना है। यहां तक कि दुनिया के अत्यंत विकसित देशों में भी ग्राम और शहर के बीच बहुत बड़ा अंतराल हैं। जब मैने अफ्रीकी देशों जैसे सूडान, तंजानिया – जंजीबार, दक्षिण अफ्रीका और मॉरिशस का दौरा किया तो मैंने यह महसूस किया कि अफ्रीकी देशों में ग्रामों और शहरों के बीच अंतराल को पाटने के लिए रोजगार, स्वास्थ्य परिचर्या और शिक्षा की संभावनाओं को पैदा किया जाना जरूरी है। उदाहरण के लिए जब मैं पिछले वर्ष अमरीका में केंटुकी में था तो मैन देखा कि पूर्वी केंटुकी के ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक विकास किए जाने की अब भी जरूरत है। जब मैं अस्ट्रेलिया में गया तो मैंने देखा कि कई क्षेत्रों में सरकार और अन्य संस्थाएं उस क्षेत्र के मूल निवासियों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे है। कई क्षेत्रों के मूल निवासी अभी तक पिछड़े हुए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि विकासशील और अर्धविकसित देशों में अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है जिस पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

ग्राम और शहर के बीच अंतराल को पाटने का कार्य तथा गरीबी और असमानता को दूर करने का लक्ष्य – दोनो का परस्पर गहरा संबंध है। विश्व की 70% अत्यंत गरीब जनसंख्या गांवों और ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। परंतु यह समस्या मात्र इतनी ही नही है।

शिक्षा, स्वास्थ्य परिचर्या और अधिक आय प्राप्त करने के लिए ग्रामीण जनसंख्या शहरी क्षेत्रों की ओर आ रही है इस उम्मीद के साथ कि उन्हें वहां अच्छे अवसर प्राप्त होंगे परंतु प्राय: उन्हें निराश होना पड़ता है। इससे शहरों में गरीबी बढ़ रही है तथा उसके साथ–साथ तनाव और सामाजिक विक्षोभ (अशांति) बढ़ रहा है।

विश्व के ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति यह है कि वहां अप्रयुक्त संसाधन तथा संभावनाएं मौजूद हैं, वहां पर युवा शक्ति और परंपरागत कौशल है। उन्हें प्रशिक्षित करके उनका मूल्यवर्धन करना है और ऐसे उद्यम स्थापित करने है जिनसे समर्थ बनाने का परिवेश बन सके। 300 करोड़ को समर्थ बनाने के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिए परंपरागत रूप से चले आ रहे विचारों से अलग विचार रखने होंगे, ऐसा सोचना होगा जो पहले कभी नहीं सोचा गया। हमें स्थायी विकास प्रणाली बनानी होगी जिससे स्थायित्व और सशक्तिकरण दोनो साथ–साथ आएं तथा उद्योगीय तरीके से उनके परिणाम मिलें।

ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराना एवं सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्थाएं

समय की मांग है कि हम स्थायी सिस्टम इजाद करें जो समर्थकारक की भूमिका निभाए और दुनिया के देशों में सम्मिलित (जिसमें सभी वर्ग शामिल हों) उन्नति तथा सम्पूर्ण विकास लाए।

ऐसी एक स्थायी विकास प्रणाली है – शहरी सुविधाओं के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रावधान का लक्ष्य जो तीन कनेक्टिविटियों नामत: भौतिक, इलेक्ट्रॉनिक, आर्थिक कनेक्टिविटी की और ले जाने वाले ज्ञान, के सृजन द्वारा पूरा किया जा सकता है

ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराने (पीयूआरए) का अर्थ:

1. गांवों को परस्पर जोड़ा जाना चाहिए तथा उन्हें मुख्य शहरों और महानगरों से भी जोड़ा जाना चाहिए। उन्हें अच्छी सड़कों द्वारा भी जोड़ा जाना चाहिए और जहां जरूरत हो वहां रेलवे लाइनों द्वारा भी जोड़ा जाना चाहिए। उनमें स्थानीय जनसंख्या तथा आगंतुकों के लिए अन्य अवसंरचनात्मक सुविधाएं जैसे स्कूल, कॉलेज,

अस्पताल तथा अन्य सुविधाएं होनी चाहिए। यह भौतिक कनेक्टिविटी है।

2. आविर्भावी ज्ञानयुग में प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण और अनुसंधान के नवीनतम साधनों द्वारा देशज ज्ञान को सुरक्षित रखा जाना तथा उसे बढ़ाया जाना चाहिए। गांवों को सर्वोतम अध्यापकों, जहां भी वे हों, द्वारा अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। उन्हें अच्छी चिकित्सा का फायदा मिलना चाहिए तथा उनके व्यवसाय जैसे कृषि, मत्स्य उद्योग, बागवानी तथा खाद्य प्रसंस्करण से संबंधित नवीनतम सूचना उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसका अर्थ है कि उनके पास इलेक्ट्रानिक कनेक्टिविटी उपलब्ध होनी चाहिए।

3. जब भौतिक और इलेक्ट्रानिक कनेक्टिविटी उपलब्ध करा दी जाती है तो ज्ञान कनेक्टिविटी भी उपलब्ध हो जाती है। वह योग्यता मे वृद्धि करती है, उत्पादन को बढ़ाती है, फालतू समय का उपयोग कराती है, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को बढ़ाती हैं, उत्पादों के लिए बाजार सुनिश्चित कराती हैं, उससे गुणवत्ता विवेक बढ़ता है, साझेदारों के साथ पारस्परिक क्रियाकलापों को बढ़ाती है, उससे हम सर्वोत्तम उपकरण प्राप्त कर सकते हैं, उससे निष्कपटता बढ़ती है और ज्ञान का आदान प्रदान बढ़ता है।

4. जब तीन कनेक्टिविटियां अर्थात भौतिक, इलेक्ट्रानिक और ज्ञान कनेक्टिविटी सुनिश्चित हो जाती हैं तो वे अर्जन क्षमता को बढ़ाती हैं जिससे हम आर्थिक कनेक्टिविटी की ओर बढ़ते हैं। जब हम ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं तो हम ग्रामीण क्षेत्रों को उन्नत कर सकते हैं, निवेशकों को आकर्षित कर सकते हैं। हम प्रभावशाली ढ़ंग से लाभदायक कार्यकलाप जैसे ग्रामीण बीपीओ, लघु वित्त व्यवस्था प्रारंभ कर सकते हैं।

समस्त भारत के लिए इस प्रकार की ग्रामोन्नयन संस्थाओं (पी यू आर ए) की अनुमानित संख्या 7000 होगी जिनके अंतर्गत 600000 गांव होंगे जिनमें 750 मिलियन जनसंख्या निवास करती है। इसी प्रकार विश्व की 300 करोड़ ग्रामीण जनसंख्या के निवास क्षेत्र को गतिशील आर्थिक क्षेत्र बनाने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी विकास लाने के लिए लगभग 30,000 ग्रामोन्नयन कॉम्प्लेक्सों की जरूरत पड़ेगी। भारत में अनेक शैक्षिक संस्थाओं, स्वास्थ्य परिचर्या संस्थाओं, उद्योगों और अन्य संस्थाओं द्वारा आरंभ की गई ग्रामोन्नयन संस्थाए हैं जो कार्य कर रही हैं। भारत सरकार द्वारा इस दिशा में पहले ही कार्य आरंभ कर दिया गया है और भारत के कई जिलों में ग्रामोन्नयन संस्थाओं ने कार्य आरंभ कर दिया है। ग्रामोन्नयन संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण विकास के उपर्युक्त सभी उदाहरणों तथा इसके साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय अनुभव को एक पुस्तक का रूप दिया गया है जिसका नाम है: 'लक्ष्य 300 करोड़'

अब मैं आपके समक्ष एक ऐसा प्लेटफार्म प्रस्तुत कर रहा हूं जो स्थायी कल्याण मॉडल का अद्वितीय उद्यम संचालित मॉडल है जिसे ग्रामोन्नयन संस्था की संकल्पना के माध्यम से सक्रिय किया गया है। सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था का अभिप्राय यह है कि यह धारणा अगली पीढ़ी की धारणा है इसको श्रमशक्ति के साथ जोड़कर सोचने की जरूरत है और यह मात्र आजीविका प्रदाता नहीं है, इससे अधिक बहुत कुछ है।

सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था का कार्य समग्रत: ग्रामोन्नयन संस्था कॉम्प्लेक्स के अंतर्गत आने वाली ग्रामीण जनसंख्या का संपूर्ण विकास करना है।

इसके साथ-साथ इसकी दृष्टि में स्थायी सामाजिक - व्यावसायिक मॉडल भी होते है जो बहुविध उद्योगियों का अनुलम्ब रूप में समेकित नेटवर्क है जो सहक्रिया के माध्यम से एक दूसरे के लिए मूल्यवर्धन प्रदान करते हैं जिससे सभी हिस्सेदारों को

लाभ होता है।

सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था में दो प्रकार के उद्योगी होते है:

1. **संसाधन उद्योगी:**

वे प्रत्येक परिवार के आय के स्तर को बढ़ाने के लिए ग्राहकानुकूल प्रौद्योगिकी और आधुनिक प्रबंधन की सहायता से प्राकृतिक, परंपरागत और मानव संसाधनो के आर्थिक कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित करेंगे। वे सर्वोत्तम पद्धतियों को अपनाकर तथा बाजार के अनुकूल उत्पाद लाकर संसाधनों को चेन तक पहुंचाने की महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करेंगे। ग्रामीण कॉम्प्लेक्स के सकल घरेलू उत्पाद की समग्र वृद्धि से उनका कार्य निष्पादन प्रतिबिम्बित होगा।

2. **सामाजिक उद्योगी:**

उद्योगियों की दूसरी श्रेणी संसाधन उद्योगियों के निकट रहते हुए उनके साथ मिलकर कार्य करेगी। वे विभिन्न अनेकताओं के रहते हुए समानता तथा सुख सुविधाओं का प्रावधान करते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य परिचर्या और रहन-सहन के स्तर में सुधार करके मानव विकास सूचकांक को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। ये उद्योगी क्रय शक्ति को बढ़ाकर जीवन स्तर में सुधार करेंगे और उस क्षेत्र में अधिक कुशल श्रमशक्ति उपलब्ध कराएंगे। इनके कार्य निष्पादन से वास्तव में साक्षरता का स्तर बढ़ेगा, आईएमआर / एमएमआर / बीमारियां कम होंगी, पोषण बढ़ेगा, अच्छा निवास उपलब्ध होगा, सफाई का अच्छा प्रबंध होगा, पीने के लिए स्वच्छ पानी उपलब्ध होगा तथा उत्तम ऊर्जा प्राप्त होगी। इससे पर्यावरण बोध बढ़ेगा तथा सामाजिक संघर्ष में कमी आएगी।

सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था के उद्योगी स्थानीय ग्रामोन्नयन चैंपियनों, जो विख्यात संस्थाएं या संगठन हो सकते हैं, की सहायता से उनके साथ मिलकर समक्रमण और एकीकरण करते हुए कार्य करेंगे। वे सरकार, स्थानीय प्रशासन और पंचायती राज (ग्राम अभिशासन संस्था) के साथ साझेदार बन कर कार्य करेंगे। सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था के संस्थागत नेटवर्क को प्रौद्योगिकीय तथा प्रबंधकीय संस्थाओं के बहु-आयामी समूह के तकनीकी सहयोग से बनाया जाएगा। इसी प्रकार विश्व के विभिन्न भागों से उद्यम इक्विटी निवेशकों के रूप में सक्रिय ग्रामोन्नयन संस्था के साझेदार बन सकते हैं तथा बाजार संयोजन तलाश का उसे बढ़ा सकते है एवं उत्पाद चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रौद्योगिकीय प्लेटफार्म, सर्वोत्तम पद्धतियां और नए समाधान मुहैया करा सकते हैं जिससे ग्रामीण कॉम्प्लेक्सों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति और मजबूत होगी। इस प्रकार विश्व भर से उद्यम, अकादमिक संस्थाएं और करोबारी इकाइयां ग्रामीण और उपनगरीय क्षेत्रों के अप्रयुक्त संसाधनों को प्रयुक्त करने के लिए अपनी मूल क्षमताओं का इस्तेमाल कर सकती हैं और मानवमात्र के विकास के लिए कार्य कर सकती हैं। इस प्रकार सहयोगात्मक संस्थाओं के लिए भारत में 6000000 गावों में जिनमें 750 मिलियन नागरिक हैं, 200 मिलियन डालर का बाजार उपलब्ध है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को अपना कर इसका परस्पर फायदा उठाया जा सकता है। विश्व के लगभग 300 करोड़ लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जिसके आधार पर इस वैश्विक विकास प्रणाली को सभी देशों में फैलाया जा सकता है।

मैं इस मॉडल को एक ऐसे समूह के समक्ष रख रहा हूं जिसमें आप सभी शामिल हैं जो करोबार, इंजीनियरी, चिकित्सा और

मानविकी के प्रवर्तक हैं जो वैश्विक कार्यकलापों में भाग लेते हैं और प्रमाणिक रूप से विश्वस्तरीय ज्ञान से सम्पन्न हैं ताकि आप सभी इस विचार को प्रस्तुत कर सकें और 300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाने में साक्षीदार बन सकें, वैश्विक विजन 2030 को साकार करें तथा विश्व में समृद्धि, प्रसन्नता और शांति का वातावरण बनाएं।

निष्कर्ष

अंत में मैं, आपसे पूछना चाहता हूं कि आप यह बताएं कि आपको आपके द्वारा किए गए कौन से कार्य के लिए याद किया जाए। आपको स्वयं अपने आपको तैयार करना है और अपना जीवन बनाना है। आप इसे एक पृष्ठ पर लिखें। मानव इतिहास की पुस्तक में यह पृष्ठ एक महत्वपूर्ण पृष्ठ हो सकता है। देश के इतिहास में एक पृष्ठ बनाने के लिए आपको याद किया जाएगा– चाहे वह पृष्ठ किसी आविष्कार का पृष्ठ हो, चाहे नवीनता का पृष्ठ हो, खेल का पृष्ठ हो, सामाजिक परिवर्तन लाने का पृष्ठ हो, गरीबी मिटाने का पृष्ठ हो, या नदियों का नेटवर्क बनाने के लक्ष्य की योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने का पृष्ठ हो।

मुझे विश्वास है कि आप परम्परा से हट कर कुछ असाधारण काम करना चाहेंगे। ऐसा इनमें से कोई भी काम हो सकता हैं:

1. क्या आपको अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला की तरह याद किया जाएगा जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका को आजादी दिलाने का आदर्श कार्य किया?

2. क्या आपको महान पर्यावरणविद नोबल पुरस्कार विजेता केन्या की प्रो. वंगारी मथाई की तरह याद किया जाएगा? जिनको अफ्रीका पौधारोपण तथा अफ्रीका में 40 मिलियन वृक्षों की रक्षा करने के महत्वपूर्ण कार्य के लिए याद किया जाता है। उन्होंने कहा था – एक वृक्ष रोपने का अर्थ है एक विचार प्रदान करना?

3. क्या आपको विश्व प्रसिद्ध मानव कंकाल विज्ञानी अफ्रीका निवासी प्रो. फिलिप वी टोबियास की तरह याद किया जाएगा? वास्तव में वे मानव विकास और प्राचीन मानव जीवाश्मों के विश्लेषण के विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ हैं?

4. क्या आपको एक ऐसी कंपनी के गठन के लिए याद किया जाएगा जो अफ्रीका की फॉर्चून 500 कंपनियों में से सर्वोच्य 100 कंपनियों में शामिल हो?

5. क्या आपको स्थायी विकास प्रणाली जिसके बारे में मैने चर्चा की है, के सृजन कार्य को आगे बढ़ाने के लिए याद किया जाएगा?

6. क्या आपको एचआईवी/एड्स को रोकने वाले टीके तथा एचआईवी/एड्स और मलेरिया के इलाज के लिए प्रतिस्पर्धात्मक लागत पर अद्वितीय दवा के आविष्कार के लिए याद किया जाएगा?

7. क्या आपको नई प्रौद्योगिकी और नवाचार का अनुप्रयोग करते हुए छोटे और मध्यम आकार के उपक्रमों के आधुनिकीरण के लिए याद किया जाएगा?

8. क्या आपको आधुनिक विज्ञानों में नये तथ्य के खोजकर्ता या अविष्कारक के रूप में याद किया जाएगा?

9. क्या आपको नवीकरणीय ऊर्जा प्रणाली के विकास के माध्यम से देश में ऊर्जा स्वावलम्बन बढ़ाने के लिए याद किया जाएगा?

10. क्या आपको 'स्वच्छ घर, स्वच्छ पर्यावरण, स्वच्छ राज्य, स्वच्छ देश के लिए कार्यभिमुख होने तथा अपने देश को कार्बनमुक्त बनाने के लिए किए गए कार्य के लिए याद किया जाएगा?

मुझे खुशी होगी, यदि आप अपने विचार मेरे ई मेल पते– apj@abdulkalam.com पर भेजें विशेष रूप से वे विद्यार्थी जो स्नातक बनने वाले हैं। पैन अफ्रीकी ई–नेटवर्क के सभी विद्यार्थियों के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। अपने देश और दुनिया के लिए उत्तम प्रौद्योगिकीय मानव संसाधन का विकास करने में आपको सफलता मिले, यही मेरी कामना है। आप पर परमात्मा की कृपा रहे।

जब मैंने डॉ. कलाम से भेंट की

वर्ष 2014 की बात है, जब मैं एनसीआरएमपी परामर्शी परियोजना के लिए नई दिल्ली से हैदराबाद जा रहा था, तब मुझे इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से भेंट करने का अवसर मिला।

मैंने लगेज चैक इन आदि औपचारिकताएं पूरी करने के बाद अपना बोर्डिंग पास प्राप्त किया। सुरक्षा जांच के बाद बोर्डिंग गेट 31ए के पास कुर्सी पर बैठ गया। चूंकि अभी फ्लाइट में समय था, सो मैंने अपना लैपटॉप खोला और इस परामर्शी परियोजना संबंधी कार्यों को करने में व्यस्त हो गया। कुछ समय बाद एक युवती मेरे पास आई और उसने मुझे सूचित किया कि फ्लाइट संबंधी घोषणा हो गई है और मुझे अब गेट की ओर प्रस्थान करना चाहिए। मुझे मालूम हुआ कि मेरे साथ की सभी सीटें खाली हो चुकी हैं और फ्लाइट के कई यात्री बोर्डिंग के लिए जा चुके हैं। मैंने भी अपना लैपटॉप बंद किया, बैग कंधे पर टांगा और बोर्डिंग गेट की ओर बढ़ चला। मैंने बोर्डिंग काउंटर के पास जाकर औपचारिकताएं पूरी की और अंततः अपने हवाई यान की ओर बढ़ चला। चलते-चलते मुझे आभास हुआ कि मेरे पीछे कुछ हलचल हो रही है। ऐसा संभवतः तब होता है जब कोई खास व्यक्ति आस-पास हो। पीछे मुड़कर मैंने देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि स्वयं मिसाइलमैन अपने तेज़ कदमों के साथ मेरे पीछे चले आ रहे थे। उनके साथ दो सुरक्षाकर्मी, एयरपोर्ट अधिकारी और एक वरिष्ठ अधिकारी चल रहे थे। मैं रुक गया और अदब के साथ मैंने उन्हें रास्ता दिया। पर जैसे ही डॉ. कलाम ने यह देखा, वे तुरंत मुझसे बोल पड़े, 'आपको मेरे लिए रुकने की आवश्यकता नहीं हैं, मेरे साथ चलते रहिए। उनके साथ चलते-चलते मैं उनके तेज़ कदमों के साथ सामंजस्य नहीं बना पा रहा था तो उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए कहा, तेज-तेज चलिए। उनकी आवाज़ में एक अद्भुत स्फूर्ति थी। मैं तो जैसे निशब्द हो चुका था तो उन्होंने ही बात आरंभ की और मुझसे मेरा नाम पूछा। मैंने अपना नाम बताया और जब उन्हें पता चला कि मैं टीसीआईएल का कर्मचारी हूं तो वे बहुत प्रसन्न हुए और बोले, 'टीसीआईएल द्वारा की जाने वाली पैन-अफ्रीकी परियोजना उनकी एक स्वप्निल परियोजना है। चलते-चलते उन्होंने भारत और अफ्रीकी राष्ट्रों से जुड़े अपने कुछ संस्मरणों को भी मुझसे साझा किया।

डॉ. कलाम के साथ वो लगभग दो मिनट की चहलकदमी मेरे लिए संभवतः अपने जीवन के सर्वाधिक गौरवमयी क्षण हैं। उस दौरान मैंने यह भी जाना कि भारत के मिसाइलमैन और देश के 11वें राष्ट्रपति डॉ़ अवुलपाकिर जैन्युअलाबेदिन अब्दुल कलाम स्वभाव से कितने विनम्र, दयालु और सरल व्यक्ति हैं। 27 जुलाई 2015 को इस महान आत्मा ने इस दुनिया से विदा ले ली पर हमारे दिलों में वे सदैव जीवंत रहेंगे।

-संजीव कुमार केसरी

भारत रत्न डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

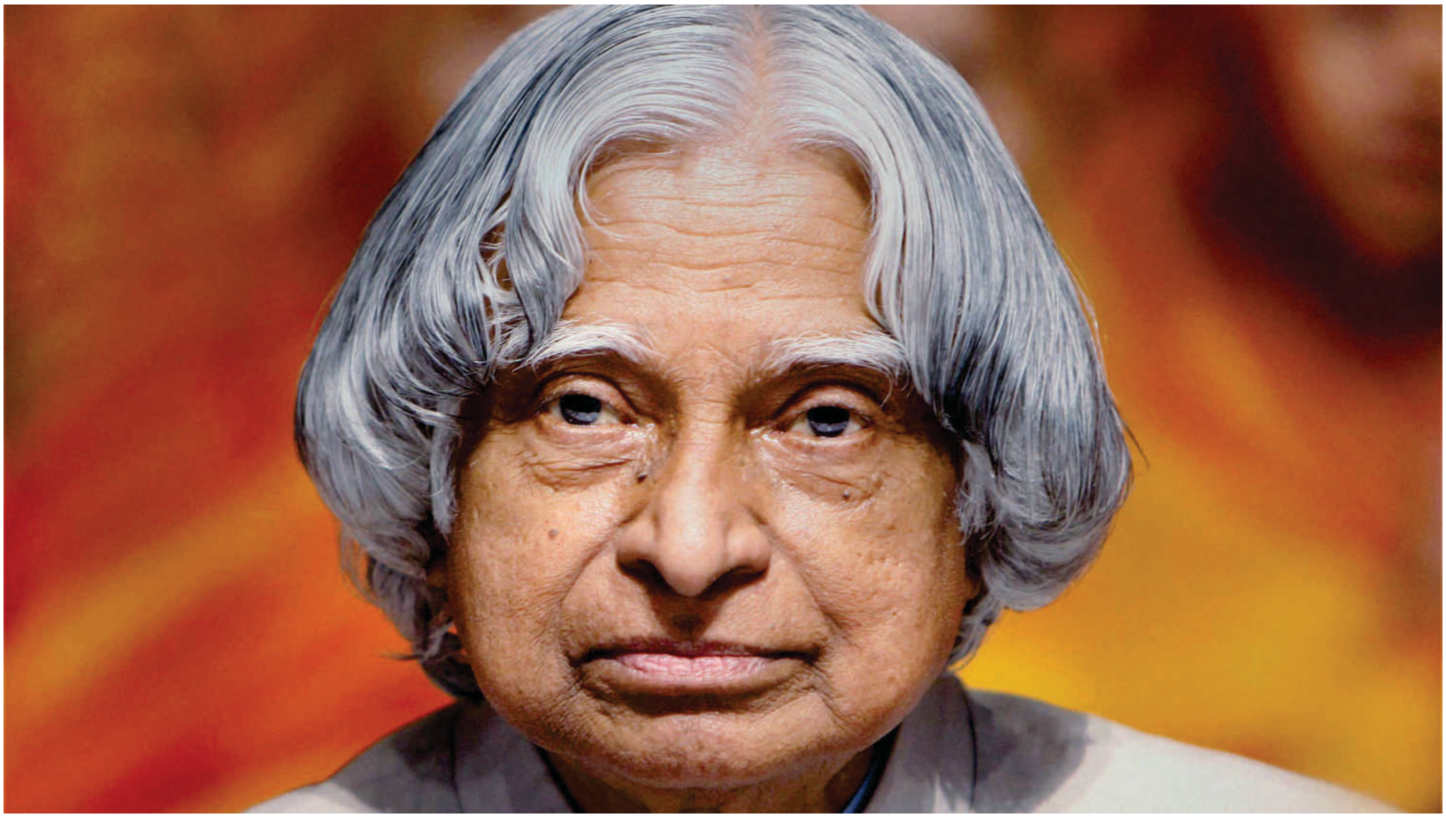

भारत रत्न डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, भारत के एक ऐसे रत्न के रुप में याद किए जाएंगे जिसकी रोशनी उन लोगों का मार्गदर्शन करती रहेगी, जो भारत को प्रगति के पथ पर आगे की ओर ले जाना चाहते हैं, और उनकी भांति भारत को एक विकसित देश के रुप में देखना चाहते हैं। डॉ. कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे किंतु वे राजनितिज्ञ नहीं थे वे हमारे वैज्ञानिक राष्ट्रपति थे, जो भौतिक संपत्ति से सफलता को न माप कर भारत को ज्ञान की महाशक्ति के रुप में देखते थे और मानते थे कि भारत सभी राष्ट्रों में श्रेष्ठ है। वे जनता के एक सच्चे प्रतिनिधि के रुप में इस पद पर विराजमान हुए जिनकी बातों और उनके विचारों को सुन कर हर कोई उनका अनुसरण करना चाहता है। इसका कारण शायद यह था कि डॉ. कलाम ने कभी स्वयं को आम लोगों से दूर नहीं किया वे लोगों के बीच जाकर उनकी बात सुनते और अपने विचार व्यक्त करते। वे हर स्तर के व्यक्ति से समान व्यवहार करते। केवल व्यस्क ही नहीं बच्चों की बातों को भी पूरा महत्त्व देते थे, डॉ. कलाम के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि वे एक बच्चे की भांति मासूम, युवा की उर्जा लिए एक परिपक्व व्यस्क थे। इसका एक सबसे बड़ा उदाहरण इस घटना से पता चलता है जब एक समारोह के दौरान उन्होंने एक बच्ची से पूछा कि उसका सपना क्या है तो उसने कहा कि वे स्वयं को एक विकसित भारत में देखना चाहती है। उस बच्ची की बात ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उनके लिए भारत को विकसित देश के रुप में देखना उनका सबसे बड़ा सपना था। डॉ कलाम का मानना था कि यदि हम एक गरीब और अक्षम राष्ट्र हैं तो अपने आध्यात्मिक ज्ञान और अभिव्यक्ति से इन समस्यायों का सामना कर सकते हैं और इसी विचारधारा को स्वयं अपनाते हुए यह आम सा व्यक्ति हमारे देश के रक्षा कार्यक्रम का नायक बन कर उभरा जिसने भविष्य दृष्टा के रुप में हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की दिशा और दशा बदल दी और

आगे चल भारत का मिसाईल मैन कहलाया। अपनी पढ़ाई के लिए अखबार बेच कर खर्चा निकालने वाला गरीब परिवार का एक छोटा लड़का जिसने अपनी गरीबी और परिस्थितियों से हार नहीं मानी बल्कि उनसे लड़ कर उन पर विजय पाई। आज उन्हीं अखबारों के पन्ने उसकी महान कहानियों और उपलब्धियों से भरे पड़े हैं।

हैदराबाद स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी में डा. कलाम ने अपने कुछ बेहतरीन व्याख्यान दिए हैं जिनमें डॉ. कलाम ने भारत के लिए अपने सपनों और भविष्य के भारत की तस्वीर सामने रखी है जिसमें पन्ने प्रमुख रुप से आजादी और विकास उनका सपना है। सबसे पहले वे आजादी की बात करते हैं। उनके अनुसार पिछले तीन हजार वर्षों के दौरान भारत पर पूरे विश्व से चारों और से हमले किए गए, सिकंदर से लेकर यूनानी, पुर्तगाली, फ्रांसिसी, डच व अंग्रजों ने भारत भूमि पर आक्रमण कर यहां की भौतिक व वैचारिक संपदा पर अपना नियंत्रण करना चाहा है। जबकि भारत ने पिछले पांच हजार वर्षों के दौरान कभी किसी राष्ट्र पर अधिकार करने के उद्देश्य से हमला नहीं किया। ऐसा क्यों नहीं किया, क्या हम समर्थ नहीं हैं या हमारे पास स्त्रोत नहीं हैं, ऐसा नहीं है बल्कि हम स्वतंत्रता का स्मान करते हैं, उसी प्रकार जैसे हम स्वयं को स्वतंत्र देखना चाहते हैं। यही कारण था कि वे भारत के भविष्यदृष्टा के रुप में आजादी को अपना पहला स्वप्न मानते थे जिसे भारत के लोगों ने अपने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से 1857 में देखा था और निरंतर उसके लिए संघर्ष करते रहे और सन 1947 में यह सपना सच कर दिखाया। यही वो आजादी है जिसकी हमें रक्षा करनी है और उसे बनाए रखना है क्योंकि यदि हम स्वतंत्र नहीं होंगे तो कोई हमारा सम्मान नहीं करेगा। डॉ. कलाम के इस आजादी के सपने के संदर्भ में मुझे ऐसा लगता है कि 1947 में प्राप्त इस आजादी का तब तक कोई मोल नहीं है जब तक हम अपने वैचारिक और सामाजिक स्तर पर आजादी प्राप्त नहीं कर लेते। भले ही आज भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र हैं किंतु आज भी सामाजिक स्तर पर बहुत सी ऐसी कुरीतियां हैं जिनसे भारत के लोगों का बौद्धिक स्तर पर आजाद होना बहुत जरुरी है। जहां डॉ कलाम भारत को ज्ञान की महाशक्ति के रुप में देखते हैं वहीं भारत के ही कुछ भागों में लोगों का वैचारिक स्तर पर उंचा उठना आवश्यक है जैसे उत्तर भारत में लिंग अनुपात में चिताजनक अंतर वर्षों से चली आ रही तंग विचारधारा का ही परिणाम है। भारतीय महिलाओं ने विश्व में प्रत्येक स्तर पर स्वयं को सिद्ध किया है, अपनी सफलताओं के परचम फहराए हैं उसके बावजूद लड़की का जन्म लेना बोझ माना जाता है। महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान आज भी भारत के समाजिक जीवन के अहम मुद्दे हैं। आज जबकि देश का संविधान पूर्णत: सक्षम है फिर भी पुराने कानूनों और दकियानूसी रीतिरिवाजों को ढोने वाली खाप पंचायतों के जनलेवा और हत्यारे फरमान जिनका आज के आधुनिक समाज में कोई स्थान और जीवन में कोई महत्त्व नहीं है। इस तरह की प्रथाएं किसी भी समाज को आगे बढ़ने से रोकती हैं इस तरह के विचार हर समाज में लोगों की स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।

डॉ. कलाम का दूसरा सपना था एक विकसित भारत – एक समारोह के दौरान एक छोटी बच्ची के मुंह से विकसित भारत के विषय में सुन कर डॉ. कलाम ने इस संदर्भ में उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया कि भारत को आजाद हुए 60 वर्षों से भी अधिक समय हो चुका है और हम आज तक एक विकासशील देश के रुप में ही जाने जाते हैं। सकल घरेलू उत्पाद के मामले में हम विश्व के सर्वोत्तम पांच राष्ट्रों में आते हैं, हमारा गरीबी का स्तर तेजी से गिर रहा है, विश्व में प्रत्येक स्तर पर भारत के डॉक्टर हो या इंजीनियर उन्होंने स्वयं को सिद्ध किया है, तकनीकी क्षेत्र में विश्व की टॉप की कंपनियां माईक्रोसॉफ्ट और गूगल के सी ई ओ भारतीय हैं। हर क्षेत्र में हम 10 प्रतिशत की गति से प्रगति कर रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बाद भी कहीं न कहीं शायद आत्मविश्वास की कमी है कि हम स्वयं को एक विकसित देश के नागरिक नहीं मानते। या हम इतने आत्म निर्भर नहीं है कि स्वयं को यह भरोसा दिला सकें की हम एक विकसित राष्ट्र के नागरिक हैं।

जब तक भारत स्वयं को विश्व में समर्थ सिद्ध नहीं करेगा तब तक कोई हमारा सम्मान नहीं करेगा। हमें केवल रक्षा के क्षेत्र में ही नहीं एक अर्थव्यवस्था के रुप में भी शक्तिशाली देश के रुप में उभरना होगा। दोनों व्यवस्थाएं साथ मिल कर चलेंगी तभी यह देश समर्थ बनेगा। इस संदर्भ में मैं जापान जैसे देश का उदाहरण सामने रखना चाहूंगी – दो परमाणु हमले और आए दिन भूकम्प झेलने वाला यह देश एशिया महाद्वीप का एकमात्र विकसित देश है। यदि इसके साथ भारत की तुलना की जाए तो परमाणु हमले में पूरी तरह से नेस्तनाबूद हो चुके इस राष्ट्र ने स्वयं को 60 के दशक तक आते आते पूर्ण रुप से स्थापित कर लिया था। यह समुन्द्र में बसा द्वीपों को जोड़ कर बनाया गया एक राष्ट्र है जहां अनगिनत भूकम्प आते हैं किंतु उसके बावजूद वहां इतनी अस्थिरता नहीं है जितनी भारत में हैं। भारत को आजादी प्राप्त किए 60 वर्ष से अधिक समय हो चुका है हम आज भी विकास ही कर रहे हैं, हमारे पास भूगौलिक और प्राकृतिक संसाधनों की कोई कमी नहीं है फिर भी अर्थव्यस्था मे स्थिरता नहीं है। क्या कारण है कि जापान जैसा देश पूरी तरह से तबाह होने के बाद कुछ ही दशकों में पूरी तरह से विकसित राष्ट्र के रुप में उभर कर सामने आता है जबकि भारत में भी ज्ञान और सामर्थ्य का स्तर किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है। क्या यह कारण माना जाए कि शायद भारत की जनसंख्या बहुत ज्यादा है तो फिर किसी भी देश के मानव संसाधन उसकी मानव शक्ति होते हैं वे भारत के लिए नुकसानदायक किस प्रकार हुए। स्वयं डॉ. कलाम ने भारत में ज्ञान प्राप्त किया, विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा हासिल कर भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के अगुआ बने और देश को रक्षा व अंतरिक्ष कार्यक्रम में समर्थ बनाया। माना जा सकता है कि सभी विशेषताओं के होते हुए कहीं न कहीं देश की शासन प्रणाली में कोई अव्यवस्थता है जिसे सुधारना बहुत जरुरी है सही नीतियां होनी जरुरी हैं ताकि सबको समान स्तर पर आगे बढ़ने के अवसर मिलें और देश के काबिल लोगों की कबिलियत का देश को लाभ मिल सके।

डॉ. कलाम इसे अपना सौभाग्य मानते थे कि उन्हें अंतरिक्ष के क्षेत्र में कार्यरत विक्रम साराभाई, प्रोफेसर सतीश धवन और परमाणु सामग्री के पितामह डॉ. बह्मप्रकाश जैसे दिग्गजों के साथ काम करने का मौका मिला और यदि डॉ. कलाम भारत को विकसित और श्रेष्ठ राष्ट्र के रुप में देखने का सपना देख पाए तो उसका कारण थे उनके कैरियर के चार पड़ाव जो उनके लिए आगे चल कर मील का पत्थर साबित हुए:– पहला जब उन्हें वैज्ञानिक के तौर पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान में भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान, एल एल वी–3 के परियोजना निदेशक होने का अवसर मिला। दूसरा – जब उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में नियुक्ति प्राप्त की और भारत के मिसाईल कार्यक्रम का एक हिस्सा बने और 1994 में अग्नि मिशन को अपने शिखर पर पहुंचा दिया। तीसरा:– रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और परमाणु उर्जा विभाग के संयुक्त प्रयासों से अग्नि जैसी सरंचना को विकसित कर परमाणु परिक्षण के जरिए संपूर्ण विश्व को दिखा दिया की भारत किसी से कम नहीं है। चौथी घटना का जिक्र वे स्वयं करते हुए बताते थे कि निजाम चिकित्सा विज्ञान संस्थान से ऑर्थोपेडिक सर्जन के माध्यम से उन्हें विकलांग बच्चों के भारी भरकम उपकरणों की जानकारी मिली ताकि वे चल सकें और स्वयं को समर्थ बना सकें किंतु उन उपकरणों का भारी वजन सबसे बड़ी बाधा थी। उन्होंने तीन हफ्ते के अंदर अग्नि मिसाईल का निर्माण करने वाली सामग्री से उन बच्चों के क्लीपर बनाए जिनक वजन सिर्फ 300 ग्राम था। लोगों के लिए विश्वास करना मुश्किल था कि कहां तीन किलो वजन और कहां इतनी हल्की सामग्री से बने वे क्लीपर्स। जिससे उन्होंने सिद्ध किया कि परमाणु उर्जा व सामग्री का प्रयोग केवल विध्वंस के लिए नहीं जन कल्याण के लिए भी किया जा सकता है। यदि हम उनकी आंखो से इस दुनिया को देखें तो एक पेड़ में जहां कविता नज़र आएगी वहीं उर्जा भी दिखेगी। बस इसके लिए हमें उनके दृष्टकोण और वैसे ही उत्साह की जरुरत होगी।

डॉ. कलाम मानते थे कि हमारा मीडिया हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है जो बहुत ही

नकारात्मक विचारधारा को लेकर चल रहा है। क्यों वे केवल कमियां ही देखते। हैं वे हमारी उपलब्धियां क्यों नहीं देखते उनका बखान क्यों नहीं करते जो हमारी ताकत हैं। हम अपनी क्षमता और सामर्थ्य को क्यों नहीं पहचानते। हम एक महान राष्ट्र हैं जिसके पास सफलता की कई शानदार कहानियां हैं पर हमारा मीडिया उसे सिरे से नकार देता है, लोगों के सामने नहीं लाता जिस पर लोग गर्व कर सकें, क्यों?

हमारा देश अनाज की पैदावार के मामले मे विश्व मे दूसरे नंबर पर है, हम दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में प्रथम स्थान रखते हैं और चावल की पैदावार में हमारा स्थान विश्व में दूसरा है। भारत विश्व का पहला ऐसा देश है जिसने रिमोट सेंसिंग उपग्रह स्थापित किया है। क्या देश के लोग डॉ. सूदर्शन को जानते हैं जिन्होंने एक आदिवासी गांव को आत्मनिर्भर और सैल्फ ड्राईविंग इकाई के रूप में स्थापित कर दिया है। अवश्य ही नहीं जानते होंगे, बहुत कम भारतीय जानते होंगे क्योंकि मीडिया में यह नहीं दिखाया गया होगा लेकिन पूरी दुनिया में सब जानते होंगे क्योंकि यह जानकारी गूगल पर उपलब्ध है। सैकड़ों ऐसी कहानियां हैं जो अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं किंतु हमारे मीडिया पर बुरी खबरों, विफलताओं और आपदाओं से भरी खबरों का जुनून सवार है। तल अवीव में अपना अनुभव बताते हुए वे कहते हैं कि वहां पर रहते हुए एक बार जब उन्होंने सुबह का अखबार देखा तो पहले ही पन्ने पर एक ऐसे व्यक्ति की कहानी थी जिसने पांच वर्षों की कड़ी मेहनत से रेगिस्तान को फूलों के एक बागीचे में बदल दिया था जबकि एक दिन पहले ही तल अवीव में भीषण बमबारी हुई थी और सैंकड़ों लोग मारे गए थे। किंतु ये एक तरीका था कि लोग सुबह उठकर एक प्रेरणादायक कहानी के साथ अपना दिन शुरु करें न कि मृत्यु, बमबारी की घटना के साथ। भारत में हम केवल मृत्यु, बीमारी, आतंकवाद और अपराध के विषय में ही पढ़ते हैं, हम इतने नकारात्मक क्यों हैं क्योंकि देश का मीडिया यही नकारात्मकता परोस रहा है। वे देश के लोगों के सामने एक सवाल और रखते हैं कि भारत के लोगों पर विदेशी वस्तुओं का इतना जूनून क्यों सवार है, क्यों हमें विदेशी टी वी, विदेशी कपड़े चाहिए और यहां तक की हम केवल विदेशी टैक्नोलॉजी पर ही भरोसा करते हैं। क्या हमें यह आभास नहीं है कि आत्म सम्मान आत्म निर्भरता के साथ ही आता है।

हर महान जीवन एक प्रीज़्म की तरह होता है जिससे निकलने वाली किरणें दूसरे लोगों को प्रभावित करती है, उनका मार्गदर्शन करती है, और उन्हें महान बनाती हैं। डॉ. कलाम के आदर्श एवं सिद्धांत हमेशा जीवित रहेंगे क्योंकि वे यथार्थ पर आधारित हैं, आज की परिस्थितियों के अनुकूल हैं। वे लोगों को स्वयं आगे आकर विकास का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करते हैं। जहां वे एक तरफ दम दया और दान के सिद्धांत में विश्वास करते थे वहीं उनका दृष्टिकोण स्वतंत्रता, विकास और शक्ति पर आधारित था। वे बौद्धिक स्तर को उंचा उठाने वाली वैचारिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे। शक्ति से उनका आशय आक्रामकता से नहीं बल्कि सूझ-बूझ और समझदारी से था। उनका मानना था कि एक असुरक्षित राष्ट्र कभी भी समृद्ध राष्ट्र नहीं बन सकता और सम्मान केवल शक्ति से ही प्राप्त होता है यही कारण था कि भारत के परमाणु और अंतरिक्ष कार्यक्रम में उनके योगदान से भारत पर दुनिया का भरोसा बढ़ा है डॉ. कलाम को याद करना या उनके सपनों को सच करने के लिए जरूरी है कि देश में अधिक से अधिक नए संस्थान खोले जाएं जहां विज्ञान व तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जाए। ये सोचना कि देश से हमें क्या मिला, ज्यादा जरूरी है कि देश के लिए हमने क्या किया है। विकसित भारत का सपना देखने वाले डॉ. कलाम ने इंडिया विज़न - 2020 की संकल्पना देश के सामने रखी और कहा कि भारत के सभी नागरिकों का यह सपना होना चाहिए तभी हम एक विकसित देश के रुप में स्वयं को स्थापित कर पाएंगे।

-जसविंदर कौर

स्मृतियां

20 मई 2012 को डॉ. कलाम ने टीसीआईएल भवन का दौरा किया था। डॉ. कलाम ने अपने इस दौरे में टीसीआईएल मुख्यालय में न केवल पैन-अफ्रीकी राष्ट्रों को संबोधित किया बल्कि कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार रखे। डॉ. कलाम के साथ बिताए गए वो पल टीसीआईएल परिवार के प्रत्येक सदस्य की स्मृतियों में सदा ही बसे रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि टीसीआईएल की बहुप्रतिष्ठित और महत्वाकांक्षी पैन- अफ्रीका परियोजना डॉ. कलाम की ही देन है। डॉ कलाम ने टीसीआईएल भवन के प्रांगण में आकर समस्त टीसीआईएल कर्मचारियों को अपने आशीर्वचनों से अनुगृहीत किया और टीसीआईएल के डेटा सेंटर से अफ्रीकी देशों को संबोधित किया।

डॉ कलाम और 2020 विकसित भारत कार्यक्रम

डॉ. अवुल पाकिर जैनुअलेबदिन अब्दुल कलाम के सपनों का भारत हर भारतीय की आशाओं, अपेक्षाओं और सपनों का भारत है। डॉ. कलाम ने एक बार हैदराबाद में आयोजित एक समारोह में एक बच्ची से पूछा कि आपके जीवन का क्या लक्ष्य है? जवाब में उस बच्ची ने कहा विकसित भारत मे रहना। डॉ. कलाम ने अपने जीवन में जितने भी कार्य किए उन सबका सारांश ही विकसित भारत की स्थापना है। जिस प्रकार हर धर्म में एक मार्गदर्शक ग्रंथ होता है, जो जीवन जीने का सही मार्ग दिखाता है, उसी तरह हम भारतवासियों के लिए भी डॉ.ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम का दिखाया हुआ मार्ग किसी ग्रंथ से कम नहीं है।

डॉ.कलाम की कई उल्लेखनीय परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों में से कुछ निम्नलिखित है:-

1. बिलियन बीट - एक मैगजीन जो कुछ लोगों की आसाधारण उपलब्धियों को सबके सामने एक प्रेरणा के रूप में पेश करती है। 2007 में शुरू हुई ये मैगजीन बाद में फेसबुक का एक पेज बनी।

2. पी. यू. र. आ. - शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता को दूर करने वाला एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम।

3. डॉ. कलाम सैद्धांतिक रूप से दम, दया और दान में विश्वास रखते थे, इसलिए उन्होंने युवा पीढ़ी के लिए 'समथिंग टू गिव' कार्यक्रम बनाया।

4. एक कार्यक्रम जो 1 लाख से भी अधिक विद्यार्थियों को देश के उत्तम वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं राजनितिज्ञों से जोड़ता है।

ऐसे ही न जाने और कितने प्रयास हैं जो उन्होंने भारत की उन्नति के लिए किए हैं।

भारत की प्रगति की दिशा डॉ. कलाम द्वारा उठाए गए कदमों में से सबसे पंसदीदा और महात्वाकांक्षी कदम है - 2020 विकसित भारत कार्यक्रम। जो नींव डॉ. कलाम रख कर गए हैं, किसी भी समाज में परिवर्तन लाने के लिए वही होनी चाहिए।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव के कार्यकाल में शुरू हुआ ये एक ऐसा कार्यक्रम है जो किसी राजनीतिक पार्टी का नही बल्कि पूरे भारत देश का कार्यक्रम है, सभी सरकारों का मुद्दा है। इसे किस तरह से पूरा किया जाना है इसका तरीका अवश्य अलग हो सकता है।

इसके लिए डॉ. कलाम ने पांच आधार स्तम्भ बताएं है जिनके तहत (1) कृषि (2) इन्फ्रास्ट्रक्चर (3) स्वास्थ (4) शिक्षा और (5)तकनीक आते हैं। डा. कलाम ने अपनी पुस्तक में इन सभी का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। आज डॉ. कलाम के प्रगतिशील विचारों और प्रयासों को आगे ले जाने के लिए पूरा देश प्रयासरत है। उनकी अतुलनीय विचारधारा ने जब भी किसी व्यक्ति विशेष अथवा समाज के साथ सम्पर्क साधा है तो वो सीधा उनसे जुड़ा है और अपना योगदान देने के लिए पूरा प्रयास किया है।

हाल में कुछ दिन पहले जब डॉ. कलाम का निधन हुआ तो मैने खुद को एक बार फिर से उनसे जुड़ा पाया। स्कूल में एक बार जब उनका व्याख्यान सुना था तो वे किसी हीरो से कम नहीं लगे। उस समय उनकी बातों ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया था कि बीते वर्षो के दौरान भारत की उन्नति में मेरा कितना योगदान रहा, अपनी क्षमताओं के अनुसार मेरी क्या उपलब्धियां रही किंतु सोचकर केवल हताशा ही हाथ लगी और साथ ही यह भी महसूस हुआ कि मैने जो इतना सोचा ये केवल उनके सशक्त व्यक्तित्व का मुझ पर प्रभाव था जिसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया था। इसी के फलस्वरूप मैने एक दृढ़ निश्चय लिया कि मैं अपने घर, अपनी नौकरी और अपने बच्चों के विकास में अपना शत-प्रतिशत दूंगी।

डॉ. कलाम ने अक्सर अपने व्याख्यानों में इस बात का उल्लेख किया कि भारत पर सदियों तक विदेशियों ने शासन किया है,

किंतु स्वयं भारत ने कभी भी किसी अन्य देश को अपना गुलाम बनाने का प्रयास नहीं किया और न ही कभी करेगा। स्वतंत्रता हमारा अधिकार है और यह केवल देश की सीमाओं में ही नहीं बल्कि हमारे विचारों में भी होनी चाहिए। मिसाईल मैन के सपनों का भारत हम सबके सपनों का भारत है। आने वाली पीढ़ी भारत को एक विकसित देश के रूप में जाने, इसके लिए में अपना शत-प्रतिशत दूंगी और अपने आस-पास के लोग जिनमें सबसे पहले मेरे परिवार के सदस्य आते हैं उन्हें अपनी इस विचारधारा के साथ जोड़ूंगी और देश में चलाए जा रहे मेक इन इंडिया और स्वच्छ भारत अभियानों के प्रति उनमे जागरूकता जगा कर उनका मार्ग दर्शन करूंगी और इन विचारधाराओं को रोजमर्रा के जीवन को जीने का एक तरीका बनाऊंगी।

डॉ. कलाम के सपनों का भारत एक विकसित भारत है जिसके लिए हम सबका योगदान अनिवार्य है। यह कोई स्वप्न नहीं, एक मिशन है हम सब भारतवासियों के लिए। जैसा कि डॉ. कलाम कह गए हैं सपने वे नहीं जो नींद में आते हैं बल्कि सपने वो हैं जो नींद उड़ा दें। कुछ ऐसा ही सपना है एक विकसित भारत का सपना।

डॉ. कलाम की सोच और उनकी धारणाओं का प्रचार-प्रसार हम सब को उनसे जोड़ता है। उनके व्यक्तित्व की महानता है कि एक बार जो उनके विचारों एवं धारणाओं से जुड़ जाता है।

आइए, बनाएं डॉ. कलाम के सपनों का भारत, हम सबके सपनों का भारत।

- अतिथि राय विरमानी

सादा जीवन उच्च विचार

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। मुझे 20 मई 2012 का वो दिन आज भी अच्छी तरह से याद है जब उनके कदम टीसीआईएल प्रांगण में पड़े थे और अपने आशीर्वाद से उन्होंने हम सभी को लाभांवित किया था। उस दिन टीसीआईएल के डेटा सेंटर में पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क के माध्यम से उन्होंने अफ्रीकी राष्ट्रों को टीसीआईएल भवन से संबोधित किया था।

पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना डॉ. कलाम के ही मस्तिष्क की उपज थी। वर्ष 2003 में पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना की घोषणा उन्होंने जोहानसबर्ग से की थी। वास्तव में यह किसी भारतीय के मन में एक नए प्रकार के विचार को कार्यान्वित करने की अभूतपूर्व पहल थी। इस परियोजना के माध्यम से भारत के प्रतिष्ठित तकनीकी व चिकित्सा संस्थानों द्वारा विभिन्न अफ्रीकी देशों को दूर-चिकित्सा और दूर-शिक्षा की सुविधा प्रदान की गई है। डॉ. कलाम की सोच जितनी विकसित थी, उनका जीवन यापन उतना ही सरल था।

उनकी ईमानदारी का एक उदाहरण यहां मैं प्रस्तुत करना चाहूंगा। वर्ष 2006 में जब वे भारत के राष्ट्रपति थे तो मई के माह में एक दिन उनका परिवार व रिश्तेदार उनसे मिलने दिल्ली आए। वे कुल मिलाकर 52 लोग थे। इनमें 90 वर्ष के उनके बड़े भाई से लेकर डेढ़ वर्ष की उनकी पड़पोती भी थी। ये लोग आठ दिन तक राष्ट्रपति भवन में रुके। वहां से वे अजमेर शरीफ भी गए। कलाम साहब ने उनके रुकने का किराया अपनी जेब से दिया। उनके रुकने और खाने-पीने, यहां तक कि चाय की प्याली की लागत भी उन्होंने अपने निजी पैसे से दी। कलाम साहब ने कुल मिलाकर तीन लाख बावन हज़ार का चैक काटकर राष्ट्रपति कार्यालय को भेजा। ऐसी महान हस्ती थे, डॉ कलाम।

-संजीव कुमार अग्रवाल

एक व्यक्तित्व जो हम सभी के लिए अनुकरणीय है

डॉ. कलाम के व्यक्तित्व का परिचय – डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को तामिलनाडू के शहर रामेश्वरम में हुआ। उनके पिता श्री जैनुअलेबदिन एक गरीब मछुआरे थे किंतु सच्चे और ईमानदार इंसान थे जो दिन में चार बार नमाज अदा करते थे। वे अपनी नाव मछुआरों को किराए पर देते थे और उससे जो धन अर्जित होता था उससे अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। फिर भी परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी और इस दयनीय स्थिति को देखते हुए बालक कलाम अखबार बेच कर अपनी पढ़ाई के लिए पैसे जुटाता था। वे सुबह चार बजे उठ कर सबसे पहले गणित की ट्यूशन लेते और फिर अपने पिता के साथ कुरान शरीफ का अध्ययन करते। उन्होंने भौतिक विज्ञान की पढ़ाई की और मद्रास के इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी से ऐरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की।

डॉ. कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे जिन्होंने विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र से राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। वर्ष 1962 में डॉ. कलाम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान में परियोजना निदेशक के पद पर नियुक्त हुए और उन्होंने भारत के पहले स्वदेशी मिसाईल एस एल वी–3 का निर्माण किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान में कार्य करते हुए वे निरंतर ऊंचाई की सीढ़ियां चढ़ते रहे।

डॉ. कलाम की उपलब्धियां

- ✦ वर्ष 1962 में स्वदेशी मिसाईल एस एल वी–3 का निर्माण
- ✦ जुलाई 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी के समीप स्थापित करना
- ✦ वर्ष 1998 में पोखरण में न्यूक्लियर बम को परमाणु ऊर्जा के साथ मिलाकर

विस्फोट किया और इसके साथ ही भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अपना स्थान हासिल किया।

डॉ. कलाम का राजनैतिक क्षेत्र

✦ 18 जुलाई 2002 को भारत के सभी राजनैतिक दलों का 90 प्रतिशत समर्थन हासिल कर ग्यारवें राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति पद पर पांच वर्ष की पूर्ण अवधि समाप्त होने के पश्चात उन्होंने कई अनुसंधान में संस्थानों में सलाहकार के पद पर कार्य किया। डा. कलाम को वर्ष 1990 में पदम भूषण और वर्ष 1992 में पदम विभूषण पुरस्कार प्रदान किए गए। भारत के अंतरिक्ष विज्ञान में अपने अथाह योगदान के लिए उन्हे वर्ष 1997 में भारत के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से नवाज़ा गया।

डॉ. कलाम का सपना

डॉ. कलाम भारत को ऐरोनॉटिकल टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में ऊंचाई पर देखना चाहते थे। डॉ. कलाम वर्ष 1992 से लेकर वर्ष 1997 तक रक्षा मंत्रालय में सलाहकार के पद पर कार्यरत रहे और इसके बाद भारत सरकार की अनुसंधान विकास परिषद में सचिव के पद पर कार्य किया। डॉ. कलाम आई आई टी और आई आई आई एम के छात्रों को ज्ञान प्रदान करते थे ताकि भारत की युवा शक्ति और समर्थ बने और विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में भारत का भविष्य उज्ज्वल हो। डॉ. कलाम को भारत के मिसाईल मैन के नाम से भी जाना जाता है। डॉ. कलाम हम सब भारतवासियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं जिन्होंने हमेशा देश के लिए एक अच्छी सोच को सामने रखा है। अभी हाल ही में भारत सरकार के सूचना मंत्रालय द्वारा जारी डिजिटल इंडिया कार्यक्रम पर भी कलाम जी के विचारों को कार्यान्वित किया जा सकता है।

27 जुलाई 2015 को मेघालय में आई आई एम में एक व्याख्यान के दौरान दिल का दौरा पड़ने से डॉ. कलाम का निधन हो गया और भारत ने अपने एक सच्चे सेवक और मिसाईल मैन को खो दिया।

-रितेश वर्मा

डॉ कलाम की युवाओं के लिए दस बिंदुओं की शपथ

1. मैं अपनी शिक्षा पूरी करूंगा व कार्य समर्पण के साथ करूंगा और मैं इनमें श्रेष्ठ (अग्रणी) बनूंगा।
2. अब से आगे बढ़कर, मैं कल से कम से कम दस लोगों को पढ़ना और लिखना सिखाउंगा, जो पढ़ लिख नहीं सकते।
3. मैं कम से कम दस नये पौधे लगाऊंगा और पूरी जिम्मेदारी से उनकी वृद्धि निश्चित करूंगा।
4. मैं निश्चित रूप से अपने मुसीबत में पड़े साथियों के दु:ख कम करने की कोशिश करूंगा।
5. मैं ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों की यात्रा करूंगा तथा कम से कम पांच लोगों को नशा तथा जुए से पूर्णत: मुक्ति दिलाऊंगा।
6. मैं ईमानदार रहूंगा और भ्रष्टाचार से मुक्त समाज बनाने की पूरी कोशिश करूंगा।
7. मैं एक सजग नागरिक बनने का कार्य करूंगा तथा अपने परिवार को कर्मठ बनाऊंगा।
8. मैं किसी धर्म, जाति या भाषा में अंतर का समर्थन नहीं करूंगा।
9. मैं हमेशा ही मानसिक और शारीरिक चुनौती प्राप्त विकलांगों से मित्रवत् रहूंगा तथा वे हमारी तरह सामान्य महसूस कर सकें ऐसा बनाने के लिए कठिन परिश्रम करूंगा।
10. मैं अपने देश तथा अपने देश के लोगों की सफलता पर गर्व उत्सव मनाऊंगा।

– सुधा मेहता

डिजिटल इंडिया और इसका महत्व

भारत एक प्रगतिशील राष्ट्र है और इसके भीतर एक विकसित राष्ट्र बनने की अपार संभावनाएं मौजूद है। इन्हीं संभावनाओं को जानते हुए भारत को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाने में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी प्रयासरत हैं। इन्हीं प्रयासों के चलते उन्होंने विगत एक वर्ष से भी अधिक समय में कई महत्वपूर्ण योजनाओं की घोषणा की है जो न केवल उनके महान दृष्टिकोण की परिचायक हैं बल्कि यह सिद्ध करती हैं कि यदि हम अपने लक्ष्यों पर सही दिशा से अग्रसर रहे तो दुनिया की कोई बाधा हमें निकट भविष्य में विकसित देशों की कतार में शामिल होने से नहीं रोक सकती है। उनकी समझबूझ और दूरदर्शिता का पर्याय बनने वाली ऐसी ही एक योजना है – डिजिटल इंडिया।

डिजिटल इंडिया के रुप में प्रधानमंत्री जी का विज़न है कि प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत को, भारत की जनता को और इसके प्रत्येक नागरिक को सरकार से जोड़ा जाए तथा संपूर्ण सिस्टम को पारदर्शी बनाया जाए ताकि भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त किया जा सके। भारत को एक ऐसे देश के रूप में विकसित किया जाए जहां संपूर्ण समाज तकनीकी रूप से शिक्षित हो, इसका उपयोग करते हुए लोग अपने जीवन को सरलतम बनाएं, सरकारी तंत्र में पारदर्शिता आए और कुल मिलाकर भारत एक मजबूत और गौरवशील राष्ट्र बने।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है – भारत को नॉलेज फ्यूचर यानि ज्ञान की भावी महाशक्ति बनाना। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें बहुत सारे छोटे-बड़े विचारों को सम्मिलित किया गया है। सरल शब्दों में कहा जाए तो ये समस्त विचार अपने आप में एक सत्व (एंटिटी) हैं और सब मिलकर एक बड़े दृष्टिकोण को सार्थक करते हैं। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत बहुत सारे विभागों को जोड़ा गया है। सारे विभाग मिलजुल कर सभी विचारों को कार्यान्वित करेंगे जिससे कि तकनीकी रूप से एक सशक्त भारत का निर्माण होगा। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत प्रधानमंत्री महोदय ने ई-गवर्नेंस को सार्थक करने का स्वप्न देखा है। इस कार्यक्रम के मुख्य रूप से तीन विज़न हैं जिन्हें विज़न ऑफ़ डिजिटल इंडिया कहा गया है:-

1 डिजिटल अवसंरचना (Digital Infrastructure)

2 गवर्नेंस तथा सर्विस ऑन डिमांड (Governance & Service on demand)

3 नागरिक डिजिटल अधिकारिता (Digital Empowerment of Citizens)

✦ डिजिटल अवसंरचना के अनुसार सरकार हाई स्पीड इंटरनेट मुहैया कराएगी। इसके तहत कॉमन सर्विस सेंटर तक आसानी से पहुंच प्राप्त की जा सकेगी। इसके तहत नागरिक मोबाइल तथा बैंक खातों के माध्यम से वित्तीय भागीदारिता में सहयोग कर सकेंगे। यही नहीं, लोगों को पब्लिक क्लाउड के माध्यम से साझा किए योग्य प्राइवेट स्पेस भी दिया जाएगा।

✦ गवर्नेंस तथा सर्विस ऑन डिमांड के अंतर्गत केंद्र तथा सभी राज्य सरकारों को आपस में ऑनलाइन सुविधा से जोड़ा जाएगा। सभी विभाग जो केंद्र तथा राज्य सरकार के अंतर्गत आते हैं, आपस में जोड़े जाएंगे और सभी संबंधित सूचनाओं को नागरिकों के लिए ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाएगा। यही नहीं, इसके माध्यम से नागरिक और सरकार के बीच एक दो-मार्गीय संचार (टू-वे कम्यूनिकेशन) की भी व्यवस्था की जाएगी।

✦ नागरिक डिजिटल अधिकारिता के तहत प्रत्येक नागरिक को तकनीकी रूप से शिक्षित किया जाएगा जिससे कि वह सभी प्रकार के तकनीकी संसाधनों का आसानी से इस्तेमाल कर सके।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत सरकार ने फंड के तौर पर 113000 करोड़ का प्रावधान रखा है। कार्यक्रम की अवधि वर्ष 2018 तक तय की गई है। हर एक परियोजना के लिए राशि नोडल राज्य / केंद्र सरकार से प्राप्त की जाएगी। इस कार्यक्रम, इस विज़न को कार्यान्वित करने का जिम्मा

इलैक्ट्रॉनिक्स विभाग तथा सूचना प्रौद्योगिकी को दिया गया है और संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय भी इससे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित रहेंगे। सरल शब्दों में इन सभी मंत्रालयों और विभागों के परस्पर योगदान से डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जाएगा।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के नौ प्रमुख क्षेत्र हैं, जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन निम्नलिखित है–

1. ब्रॉडबैंड अवसंरचना

इस कार्यक्रम के अंतर्गत ढाई लाख ग्राम पंचायतों को हाई स्पीड इंटरनेट से जोड़ा जाएगा। इस कार्यक्रम को पूरा करने का दायित्व बीबीएनएन को नोफेन (NOFN) के रूप में सौंपा गया है। इसके तहत कुल 32000 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इसी के अंतर्गत नेशनल इंफॉरमेटिक सेंटर को और मजबूत किया जाएगा जिसके अंतर्गत केंद्र और सभी राज्य सरकारों के विभागों को जोड़ा जाएगा। केंद्र और राज्य सरकार के विभागों को जोड़ने के कार्य के लिए 15686 करोड़ रू. का प्रावधान किया गया है। दूसरी ओर, शहरी ब्रॉडबैंड में वर्चुअल नेटवर्क सर्विस प्रोवाइडर के माध्यम से सभी नए भवनों में ब्रॉडबैंड की सुविधा दी जाएगी।

2. मोबाइल कनेक्टिविटी फॉर ऑल – इसके अंतर्गत देश के 44000 गांव, जोकि तकनीकी सुविधाओं से वंचित हैं, को मोबाइल द्वारा कनेक्ट किया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए 16000 करोड़ रू. का प्रावधान है।

3. एक्सेस टू पब्लिक इंटरनेट – सीसीएस यानि साझा सेवा केद्रों को बहुआयामी बनाया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए 4270 करोड़ रू. का प्रावधान किया गया है जिसके तहत इस सुविधा का विस्तार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त करीब डेढ़ लाख डाकखानों को भी बहुसेवा केद्रों में परिवर्तित किया जाएगा।

4. ई-अभिशासन – सभी व्यवसायिक प्रक्रियाओं को पुन:निर्मित किया जाएगा। सरकारी सुविधाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाएंगी। सरकार तथा नागरिक आपस में जुड़ेंगे। बिना परेशानी के सरकार से मनचाही जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

5. ई-क्रांति – सभी नागरिक ई-शिक्षा, ई-स्वास्थ्य, ई-कृषि जैसी सुविधाओं का लाभ उठा पाएंगे।

6. वैश्विक स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी सूचना – एक वृहत क्षेत्र पर सूचना प्रौद्योगिकी का डेटाबेस उपलब्ध कराया जाएगा। इसमें सभी नागरिक न केवल सूचना प्राप्त कर सकेंगे बल्कि अपनी ओर से भी जानकारी दर्ज करा पाएंगे। इसमें सोशल मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी और यह mygov.in के माध्यम से किया जा सकेगा।

7. आईटी फॉर जॉब्स – छोटे शहर तथा गांवों के 1 करोड़ विद्यार्थियों को आईटी में प्रशिक्षित करना ताकि इस क्षेत्र में वे रोज़गार प्राप्त कर सकें।

8. आईटी हारवेस्टिंग – इसके अंतर्गत केंद्र सरकार के सभी विभागों को बायोमेट्रिक प्रणाली से जोड़ा गया है। ऑनलाइन वेब आधारित आवेदन के माध्यम से सभी अपनी उपस्थिति को ऑनलाइन दर्ज करा सकेंगे जबकि लोग किसी अन्य स्थान पर बैठे उसे देख भी पाएंगे। इसके तहत सभी कर्मचारियों के ई-मेल पते का मानकीकरण भी किया जाएगा।

9. इलैक्ट्रॉनिक विनिर्माण – इस कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य घरेलू स्तर पर इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों और सेवाओं को विकसित कर उसे जन-जन तक पहुंचाना है। इलैक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे कि सेट टॉप बॉक्स, मोबाइल आदि यदि देशीय स्तर पर निर्मित होंगे तो इससे न केवल लागत बचेगी बल्कि घरेलू तकनीक का भी विकास होगा।

अंत में यह ही कहना चाहूंगी कि डिजिटल इंडिया के तहत देश में कागज़मुक्त व्यवस्था प्रणाली (पेपरलैस सिस्टम) को बढ़ावा मिलेगा, कार्यों में पारदर्शिता बढ़ेगी जिससे भ्रष्टाचार में कमी आएगी और स्वदेशी तकनीकों और सेवाओं का उपयोग बढ़ेगा। यह हम सभी का दायित्व बनता है कि देश को विकसित और तकनीकक्षम बनाने का जो स्वप्न माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने देखा है, हम उसे पूरा करें।

–अमरजीत कौर

जोखिम प्रबंधन और संगठन में इसका महत्व

किसी भी संगठन में अनिश्चितता का प्रमुख कारण होता है जोखिम। आज के समय में कंपनियां ऐसे जोखिमों की पहचान करने और उन्हें प्रबंधित करने पर ज्यादा ध्यान देती हैं जो उनके व्यवसाय को प्रभावित करते हैं। जो संगठन समय रहते ऐसे जोखिमों की पहचान कर लेते हैं वे न केवल इनसे बेहतर ढंग से निपट पाते है बल्कि इनसे सीख लेते हुए भविष्य के लिए बेहतर अवसरों का निर्माण भी कर लेते हैं।

किसी भी सगंठन के लिए जोखिम प्रबंधन एक महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि यह भविष्य के लक्ष्यों को परिभाषित करने में मदद करता है और यह निम्नलिखित प्रकार से योगदान देते हुए कार्य निष्पादन को बेहतर बनाता है:

1) अकस्मात और अज्ञात रूप से मिलने वाली सुखद या दुखद अनुभूतियां

2) संसाधनों का अधिक प्रभावशाली उपयोग

3) पूंजी की न्यून लागत

4) बेहतर सेवा प्रदायगी

5) विकसित नूतन कार्य

6) नीतियों को प्रभावशाली रूप देने पर अपना ध्यान केंद्रित करना

प्रभावशाली जोखिम प्रबंधन नीति कंपनियों को अपना लाभ अधिकतम करने और उन खर्चों को न्यूनतम रखने में मदद करती है जो विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से निवेश पर कोई प्रतिफल नहीं देता है।

वैसे सरकारी सेक्टर में जोखिम प्रबंधन का अनुसरण नहीं किया जाता है। क्योंकि इस सेक्टर में सरकारी विधानों के तहत लागत प्रभावशीलता पर कार्य किया जाता है और व्यापक जोखिम प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए किसी सुपरिभाषित संरचना का उपयोग नहीं किया जाता है। वास्तव में जोखिम को प्रबंधित करने के लिए कोई मानक प्रारूप या कोई उपकरण मौजूद नहीं साथ ही जोखिम रिपोर्टिंग, जोखिम लेखापरीक्षा या जोखिम उत्तरदायित्व जैसे कार्य भी नहीं किए जाते हैं।

संगठन में जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया को विकसित और कार्यान्वित करते हुए उसका अनुसरण किया जाना चाहिए।

संगठन – परिपक्वता का स्तर

ये स्तर चार प्रकार के हैं

- स्तर 1 – साधारण जोखिम संगठन
- स्तर 2. – गैर व्यावसायिक जोखिम संगठन
- स्तर 3. – सरलीकृत जोखिम संगठन
- स्तर 4. – प्राकृतिक जोखिम संगठन

संगठन के सिंहावलोकन के आठ चरण

1. हम क्या हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं?

1.1 प्रारंभ करना (संसाधन प्रारंभण)

2. यह हासिल करते हुए हमें क्या प्रभावित कर सकता है?

2.1 जोखिम ढूंढना (जोखिम की पहचान)

3. इनमें से कौन सी बातें अधिक महत्वपूर्ण हैं?

3.1 प्राथमिकताओं का निर्धारण

4. इन्हें लेकर हमें क्या करना चाहिए?

4.1 क्या किया जाना है, इस पर निर्णय लेना (जोखिम प्रतिक्रिया योजना)

5. क्या हमने कार्रवाई की?

5.1 कार्रवाई करना (जोखिम प्रतिक्रिया कार्यान्वयन)

6. यह किसे जानने की आवश्यकता है?

6.1 दूसरे लोगों को बताना (जोखिम रिपोर्टिंग)

7. कार्य करते हुए, किसमें बदलाव आया?

7.1 अद्यतन रखना (जोखिम समीक्षा)

8. हमने क्या सीखा?

8.1 सीख प्राप्त करना (जोखिम संबंधी सीख)

जोखिम प्रबंधन

जोखिम: एक अनिश्चित भावी घटना जो संगठन की नीतियों, प्रचालनों और वित्तीय लक्ष्यों को प्रभावित कर सकती है।

जोखिम प्रबंधन

जोखिम प्रबंधन एक पूर्ण परियोजना जीवन-चक्र उत्तरदायित्व है

जोखिम प्रबंधन परियोजना नियोजन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है

परियोजना जोखिम प्रबंधन:

परियोजना प्रबंधन का सबसेट जिसमें जोखिमों की पहचान करना, उनका विश्लेषण करना, उनकी योजना बनाना, उनकी ट्रैकिंग करना और परियोजनाओं के संबंध में उन्हें नियंत्रित करना शामिल है।

जोखिम वर्गीकरण:

- व्यावसायिक जोखिम बनाम विशुद्ध जोखिम
- परियोजना तत्वों पर प्रभाव द्वारा वर्गीकृत
- उनकी प्रकृति द्वारा वर्गीकृत
- उनके स्त्रोत द्वारा वर्गीकृत

जोखिम घटनाओं की विशेषताएं:

- परिस्थितिजनक
- परस्पर निर्भर
- महत्व पर निर्भर
- मूल्य आधारित
- समय आधारित

जोखिम आकलनों को प्रभावित करने वाले तथ्य:

- नियंत्रण का अभाव
- सूचना का अभाव
- समय
- जोखिम प्राथमिकताएं

जोखिम प्रबंधन के चार प्रमुख संसाधन हैं:

- जोखिम पहचान – यानि कौन-कौन से जोखिम हैं?
- जोखिम योग्यता – हमें किस जोखिम पर अधिक ध्यान देना चाहिए?
- जोखिम प्रतिक्रिया विकास – इस संबंध में हमें क्या करना चाहिए?
- जोखिम प्रतिक्रिया नियंत्रण – क्या यह करना चाहिए?

परियोजना जोखिम प्रबंधन

ऐसा नहीं है कि जोखिम सदैव नकारात्मक होते हैं। जोखिमों की सही समय पर पहचान कर ली जाए तो उससे अवसर उत्पन्न होते हैं जिनका लाभ उठाते हुए संगठन को सुदृढ़ किया जा सकता है।

जोखिम और अवसर प्रबंधन एक सतत प्रक्रिया है जो परियोजना जीवन चक्र के सभी चरणों के दौरान जारी रहती है। परियोजना में जोखिम और अवसर प्रबंधन पर जो सबक हासिल किए जाते हैं, वे भावी परियोजनाओं की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

1. जोखिम पहचान

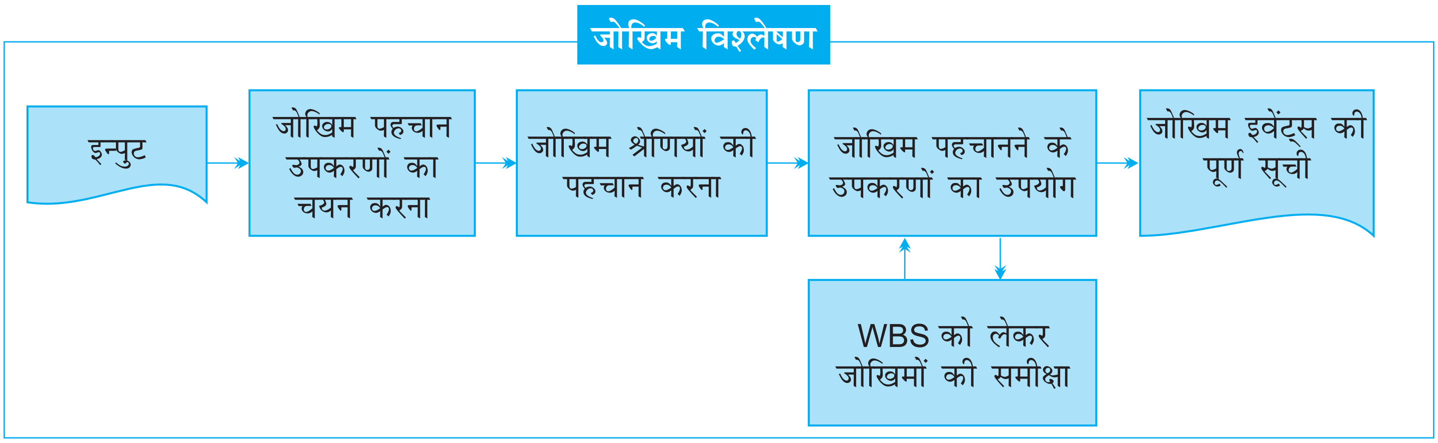

इन्पुट	उपकरण
डब्ल्यूबीस	जोखिम पहचान तकनीक
अनुबंधनात्मक अनिवार्यताएं	विशेषज्ञ साक्षात्कार
लागत एवं कार्यसूची प्राक्कलन	ब्रेनस्टोर्मिंग
स्टाफिंग योजना	डेल्फी तकनीक
सीखे गए अध्यायों की फ़ाइल	सामान्य समूह तकनीक
कार्यक्षेत्र विवरण	समरूपता
उत्पाद या प्रदायगियां	क्राफोर्ड स्लिप
	जांचबिंदु, प्रश्नावलियां, टेम्पलेट्स

परियोजना जोखिम: एक अनिश्चित घटना या शर्त जिसके होने पर परियोजना के लक्ष्यों पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पर जोखिम का कोई न कोई कारण होता है और इसके बाद एक महत्वपूर्ण परिणाम अवश्य मिलता है।

जोखिम की श्रेणियां: कार्यक्षमता, सुरक्षा, बाज़ार, लाभप्रदता, अप्रचलन, संसाधन, पूंजी, श्रम, प्रबंधन, घटक, विनियमन, कार्यसूची, वातावरण, विधिक प्रक्रिया।

जोखिम पहचान उपकरण:

- साक्षात्कार
- विचार-विमर्श
- डेल्फ़ी तकनीक
- साधारण सामूहिक तकनीक
- क्रॉफर्ड स्लिप्स
- जांचबिंदु, प्रश्नावली, टेम्पलेट्स
- कारण और प्रभावशीलता रेखांकन
- SWOT विश्लेषण
- पूर्वानुमान विश्लेषण
- उद्योग बैंचमार्किंग
- परिदृश्य विश्लेषण
- व्यावसायिक प्रक्रिया विश्लेषण

डेटा एकत्रीकरण

- अभिज्ञात जोखिम
- जोखिम विवरण
- मूल कारण
- वह परिस्थिति जो इसका कारण बनी
- संभावना का प्राक्कलन (न्यून, मध्यम, उच्च या समान)
- प्रभाव का प्राक्कलन (न्यून, मध्यम, उच्च, या समान)
- असाइन किया गया स्वामित्व
- संभावित प्रतिक्रियाएं

जब बारिश होती है तो सब पंछी आश्रय ढूंढते हैं पर बाज को किसी आश्रय की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि वो बादलों से भी ऊपर उड़ता है।

मनुष्य के जीवन में कठिनाइयां आनी बहुत ज़रूरी है क्योंकि उन्हीं के कारण उसे सफलता का महत्व पता चलता है। -डॉ. कलाम

इन्पुट	उपकरण
अभिज्ञात जोखिमों की वर्गीकृत श्रेणी	विशिष्ट उपकरण
ड्ब्ल्यूबीएस	निर्णय वृक्ष
अनुबंधनात्मक अपेक्षाएं	प्रत्याशित मूल्य
लागत एवं कार्यसूची प्राक्कलन	जोखिम आकलन प्रश्नावली
स्टाफिंग योजना	निर्णय लेने संबंधी उपकरण
सीखे गए अध्यायों की फाइल	जीवन चक्र लागत विश्लेषण
अन्य परियोजना संबंधी योजना	वित्तीय मानदंड
रेटिंग सस्टिम दिशानिर्देश	संभाव्यता कार्यक्षमता
	परियोजना प्रबंधन उपकरण
	माइलस्टोन चार्ट्स
	नेटवर्क डायग्राम्स
	पीईआरटी
	कंप्यूटर अनुकरण
	मोंटी कार्लो

2. जोखिम पात्रताः

गुण वाचक दृष्टिकोण के माध्यम से संभाव्यता को व्यक्त किया जाता है और/या ऑर्डिनल रेटिंग सिस्टम को प्रभावित करता है।

गुण वाचक दृष्टिकोण संभाव्यता को व्यक्त करता है।

प्रभावशीलता विश्लेषणः

1. जीवनचक्र लागत

2. संभाव्यता

- बिक्री पर प्रतिफल (ROS)
- परिसंपत्तियों पर प्रतिफल (ROA)
- आर्थिक मूल्यवर्धन (EVA)
- निवल वर्तमान मूल्य (NPV)
- प्रतिफल की आंतरिक दर (IRR)

3. जोखिम प्रतिक्रिया विकासः

जोखिम की स्वाभाविक इच्छा और सहिष्णुता – ये दोनो उन सीमाओं का निर्धारण करते हैं जिससे यह ज्ञात हो कि कोई संगठन कितना जोखिम उठाने के लिए तैयार है।

जोखिम की स्वाभाविक इच्छा एक उच्च स्तरीय विवरण है जो व्यापक रूप से जोखिम के उस स्तर पर विचार करता है जहां तक कोई प्रबंधन जोखिम उठाने के लिए तैयार है।

जोखिम सहिष्णुता कुछ अधिक विशिष्ट है और सामरिक और व्यावसायिक उद्देश्यों के भीतर भिन्नता के स्वीकार्य स्तर का निर्धारण करती है।

जोखिम मूल्यांकनः

जब जोखिम विश्लेषण पूरा हो जाता है तो संगठन द्वारा उठाए गए जोखिम की तुलना जोखिम उठाने की इसकी स्वाभाविक इच्छा और इसे प्राप्त हुए अवसरों और संभावनाओं से किए जाने की आवश्यकता होती है।

संगठन के जोखिम के महत्व के बारे में निर्णय लेने के लिए जोखिम मूल्यांकन का

उपयोग किया जाता है और यह देखा जाता है कि क्या प्रत्येक विशिष्ट जोखिम स्वीकार किया जाना चाहिए और लागत एवं लाभ, विधिक अपेक्षाओं इत्यादि सहित विभिन्न मानदंडों पर किस प्रकार खरा उतरता है।

जोखिम उपचार:

यह वो प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जोखिमों को संशोधित करने के लिए मानदडों का चयन और कार्यान्वयन किया जाता है। साथ ही इसमें वे निर्णय भी शामिल हैं जिनके माध्यम से हम यह तय करते हैं कि कोई जोखिम जाना चाहिए या उसका परिहार किया जाना चाहिए या फिर उसे स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए।

तकनीक:

- परिहार करना
- कम करना
- साझा करना
- स्थानांतरित करना
- स्वीकार करना

जोखिम प्रतिक्रिया

रणनीति

- खतरे या नकारात्मक जोखिम – परिहार करना, स्थानांतरित करना, कम करना
- अवसर या सकारात्मक जोखिम – श्रमसाध्यता, साझा करना, या कार्य बढाना
- खतरे और अवसर – स्वीकार करना
- अस्पष्टता पर संभावित खतरा – आकस्मिक प्रतिक्रिया

रिजर्व्स:

परियोजना या योजना में कोई प्रावधान जिनके माध्यम से लागत या अनुसूचित जोखिम को कम किया जाता है।

मैनेजमेंट रिजर्व्स: ज्ञात–अज्ञात

आकस्मिक रिजर्व्स: ज्ञात–अज्ञात

रिजर्व्स का निर्धारण करने वाले तथ्य

- जीवन चक्र स्थिति
- प्राक्कलन दृष्टिकोण
- अनुबंध के प्रकार
- खतरे का प्रकटीकरण
- अवसर संतुलन
- जोखिम सहने के स्तर
- स्वीकृत जोखिम
- ओवररन्स के परिणाम
- सीखे गए अध्याय

4. जोखिम प्रतिक्रिया नियंत्रण:

- परियोजना के जारी रहते हुए जोखिम की घटनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप जोखिम प्रबंधन योजना का कार्यान्वयन करना।
- यह प्रमुख परियोजना प्रबंधन प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत है।
- जोखिम प्रतिक्रिया नियंत्रण दिशानिर्देश:
- परियोजना प्रगति की गहनता से निगरानी करना
- यदि समस्याएं या अकस्मात घटनाएं घटित हों तो जोखिम प्रतिक्रियाओं का समयबद्ध कार्यान्वयन करना।
- प्रभावशीलता या जोखिम प्रतिक्रियाओं का व्यापक रूप से मूल्यांकन करना
- निरंतर अनुसरण करना
- संपूर्ण परियोजना प्रबंधन योजना और प्रक्रियाओं के भाग के रूप में इसे करने का एकमात्र तरीका है

✓ जोखिम नीतियों का कार्यान्वयन

✓ उन योजनाओं की पहचान करने के लिए पूर्वचेतावनी तंत्र को स्थापित करना जिनके कारण जोखिम लेना अनिवार्य हो जाता है

✓ किसी प्रतिक्रिया को विकसित या कार्यान्वित करने के लिए उत्तरदायित्व की रेखा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक है।

उपयोग किए गए उपकरण – **मैट्रिक्स क्रिया–वस्तु सूची**

✓ इसमें नियमित रूप से आयोजित की जाने वाली परियोजना स्थिति बैठकों के लिए कार्यसूची में जोखिम की समीक्षा करना शामिल है

✓ आकस्मिक योजनाओं और कार्य स्थितियों का कार्यान्वयन

✓ स्टेकधारकों और टीम सदस्यों के साथ सभी जोखिम प्रतिक्रियाओं के संबंध में संचार-संप्रेषण करना

जोखिम दस्तावेज़ीकरणः

जोखिम दस्तावेज़ीकरण एक प्रकार से जोखिम प्रबंधन का घोषणापत्र है। इसीलिए, इसे नवीनतम, सटीक,सरल और स्पष्ट होना चाहिए और यह समय-समय पर उत्पन्न होने वाली अस्पष्टताओं को भी कम करता है।

इसमें जोखिम इवेंट्स, जोखिम विश्लेषण, जोखिम प्रतिक्रिया, समुचित कार्रवाई और निवल वास्तविक परियोजना प्रभाव शामिल है।

यह प्रक्रिया यह परिभाषित करती है कि कैसे और कब दस्तावेज़ों को बनाया जाना और उन्हें किस प्रकार रखा जाना हैं

जोखिम - परियोजना समापन का अंतिम चरण

जोखिम प्रतिक्रिया नियंत्रण और जोखिम प्रबंधन में निम्न शामिल हैं-

- अंतिम जोखिम आकलन
- सीखे गए अध्यायों का डेटा

जोखिम प्रोफाइलः

जोखिम विश्लेषण प्रक्रिया के परिणामों को जोखिम प्रोफाइल बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसके उदाहरण निम्नलिखित हैं:

निम्नलिखित पी-आई मैट्रिक्स सुझाए गए हैं:

जोखिम श्रेणी	प्राथमिकता	संदर्भ
परियोजना स्थान	अति उच्च	1
सुरक्षा	अति उच्च	2
विनियमन एवं विधि	उच्च	3
श्रम	मध्यम से उच्च	4
कार्यक्षमता	उच्च से अति उच्च	5
परिपूर्णन	मध्यम से उच्च	6
वातावरण	मध्यम	7
तकनीक	मध्यम	8
कार्यसूची परिवर्तन	मध्यम से उच्च	9
पूंजी	मध्यम	10
लाभप्रदता	मध्यम से उच्च	11
संसाधन	न्यून से मध्यम	12

जोखिम उपचार कार्रवाई स्थिति

संदर्भ	जोखिम श्रेणी	जोखिम विवरण	प्राथमिकता	उत्तरदायी व्यक्ति	स्थिति
5	कार्यक्षमता	साइट ने कार्य करना बंद कर दिया है	उच्च	परियोजना प्रभारी एवं इंजिनियर	कार्य प्रगति पर है

संदर्भ	जोखिम श्रेणी	जाखिम विवरण	प्राथमिकता	उत्तरदायी व्यक्ति	स्थिति
9	अनुसूची परिवर्तन	संस्थापना बंद हो गई है क्योंकि श्रमशक्ति की कमी के कारण ठेकेदार कार्य करने में असमर्थ है और परियोजना लंबित हो रही हैं जिससे एलडी लग सकती है या लग गई है	उच्च	परियोजना प्रभारी एवं दल	कार्य प्रगति पर है
9	कार्यसूची परिवर्तन	कार्यार्थी की तरफ से कुछ तकनीकी समस्या आने के कारण परियोजना लंबित हो गई है	मध्यम	कार्यार्थी	परिपूर्ण

प्रत्येक जोखिम को दर्ज करने के लिए एक जोखिम रजिस्टर भी रखा गया है।

जोखिम रजिस्टर निम्नलिखित स्वरूप में बनाया जा सकता है:		
शीर्षक	:	लिए गए जोखिम की तिथि:
जोखिम की श्रेणी	:	जोखिम आकलन की तिथि:
जोखिम स्वामी	:	जोखिम आकलन निम्न द्वारा किया गया:

अभिज्ञात जोखिम			जोखिम विश्लेषण			मूल्यांकन कार्य
जोखिम विवरण	कारण	प्रभाव	मौजूदा नियंत्रण	नियंत्रण आकलन	जोखिम आकलन	क्या जोखिम का उपचार किया गया?

कार्ययोजना:

- संगठन में जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया को विकसित और कार्यान्वित करते हुए उसका अनुसरण किया जाना चाहिए।
- संगठन के जोखिम प्रबंधन को कार्यान्वित करने के लिए अपेक्षित संसाधनों को प्रबंधन के प्रत्येक स्तर पर स्पष्ट रूप से स्थापित किया जाना चाहिए।

–अमरजीत कौर

टीसीआईएल की सफलता गाथाएं

व्यावसायिक और सामाजिक लक्ष्य

टीसीआईएल भारत सरकार का एक उद्यम है जो दूरसंचार विभाग, संचार एंव प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन कार्य कर रहा है। एक परियोजनामूलक संगठन के रूप में टीसीआईएल का मूल उदेश्य य संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टर्नकी परियोजनाओं का निष्पादन करना है और अत्याधुनिक, विश्वसनीय, चिरस्थायी दूरसंचार व सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना के विकास के लिए समुचित अवसरों को तलाश कर उन पर काम करते हुए वैश्विक स्तर पर समाधान प्रस्तुत करना है। भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए महत्वपूर्ण अभियान डिजिटल इंडिया का दृष्टिकोण भी वास्तव में यही है। इसके अलावा टीसीआईएल कौशल विकास को लेकर भी गंभीरतापूर्वक प्रयास कर रहा है क्योंकि टीसीआईएल का मानना है कि संपूर्ण व्यावसायिक विकास की आधारशिला ही कौशल विकास है।

टीसीआईएल ने सरकारी उपक्रमणों के अनुपालन में निम्नलिखित क्षेत्रों में उपक्रमणों के विकसित करने के लिए नीतियां बनाई हैं

1. **मेक इन इंडिया**
2. **स्वच्छ भारत अभियान**
3. **कौशल निर्माण**

4. **डिजिटल इंडिया**

1. मेक इन इंडिया

टीसीआईएल संचार एंव सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टर्नकी परियोजनाओं का निष्पादन करने वाला एक अग्रणी परामर्शी संगठन है जो इन क्षेत्रों के अलावा परिवहन, स्वास्थ्य, शिक्षा, तेल एंव गैस, एमएसएमई जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण परियोजनाओं का निष्पादन कर रहा है।

दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आए परिवर्तन के चलते टीसीआईएल ने भी अपने कार्यों में विविधता लाते हुए सिविल, शिक्षा और अन्य सेक्टरों में कदम रखा है और इन क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है।

भारतीय दूरसंचार उत्पादों और सेवाओं के भारत विशिष्ट मानक विकास और निर्यात संवर्धन के एक भाग के तौर पर टीसीआईएल भारत दूरसंचार मानक विकास निगम (टीएसडीएसआई) और दूरसंचार उपकरण एंव सेवा निर्यात प्रोत्साहन परिषद (टीईपीसी) जैसे दूरसंचार निकायों में सक्रिय रूप से शमिल है।

टीसीआईएल ने भारत में ऑप्टिकल फ़ाइबर केबल के विनिर्माण के लिए जापान की फुजीकुरा और तमिलनाडु सरकार के साथ भागीदारी करते हुए तमिलनाडू टेलीकॉम लि. (टीटीएल) में निवेश किया है।

2.स्वच्छ भारत अभियान में टीसीआईएल का योगदान

स्वच्छ भारत अभियान मूल रूप से वायु, जल, कार्यालय, सार्वजानिक एंव निजी परिसर और ई-कचरा को प्रबंधित करने पर केंद्रित है।

टीसीआईएल ने स्वच्छ भारत कार्यक्रम के दायरे में रहते हुए नदियों के जल की स्वच्छता संबंधी निगरानी और प्रबंधन के लिए एक दूरसंचार एंव सूचना प्रौद्योगिकी आधारित समाधान विकसित किया है जो एक स्वच्छ वातावरण को बनाए रखने के लिए प्रभावी नियंत्रण प्रणाली प्रदान करता है।

टीसीआईएल ने सरकार और सैक्टर संगठनों के साथ सहयोग करते हुए ई-कचरा को एकत्रित करने और उनका निपटान करने के लिए ई-कचरा प्रबंधन को एक व्यावसायिक रूप प्रदान करने की पहल की है।

नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और सतत परियोजनाओं के अंश के रूप में टीसीआईएल ने ऐसे स्थानों

पर, जहां इसकी परियोजनाएं चल रही हैं, के निकट स्थित विद्यालयों में कन्या शौचालयों का निर्माण करवाया। साथ ही अपने कार्यालय में पुराने रिकॉर्ड और कागज़ों के निपटान कार्य की भी टीसीआईएल द्वारा निरंतर समीक्षा की जाती है। साथ ही यह प्रयास भी किया जाता है कि टीसीआईएल में कागज़ों और दस्तावेज़ों का कम उपयोग हो और अधिक से अधिक रिकॉर्ड को इलैक्ट्रॉनिक रूप से दर्ज किया जाए। टीसीआईएल की ईआरपी प्रणाली इसी का एक उदाहरण है जहां प्रत्येक कर्मचारी से संबधित डेटा कंप्यूटर में दर्ज है और हर प्रकार के आवेदन के लिए कर्मचारियों द्वारा कागज़ों की बजाए ईआरपी प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

टीसीआईएल अपनी ऊर्जा अनिवार्यताओं की भी निरंतर समीक्षा करता है और इसी के चलते टीसीआईएल में परंपरागत लाइटिंग के स्थान पर एलईडी लाइट्स को शामिल किया गया है। अपने पार्किंग क्षेत्र का सदुपयोग करते हुए यहां सौर ऊर्जा प्रणाली की भी स्थापना की गई है।

टीसीआईएल ने जल प्रबंधन के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली की भी स्थापना की है।

टीसीआईएल का सिविल और वास्तुकला प्रभाग स्वच्छ भारत अभियान के उपक्रमणों को और आगे बढ़ा रहा है तथा इस प्रभाग द्वारा जिन भवनों के निर्माण का कार्य किया जा सकता है, उन्हें पूर्णतया हरित और वातावरण हितैषी रूप में डिज़ाइन किया गया है।

टीसीआईएल अपने नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व और चिरस्थायी विकास कार्यक्रम, उपक्रमणों और सरकारी दिशनिर्देशों व अनुदेशों के तहत अपने कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाने के हरसंभव प्रयास कर रहा है। टीसीआईएल द्वारा स्वच्छ भारत मिशन को लेकर निरंतर रूप से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विगत एक वर्ष के दौरान स्वच्छ भारत, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और कौशल जैसे विषयों पर समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे कि निबंध लेखन, वाद-विवाद, प्रस्तुतीकरण आदि का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया। टीसीआईएल इन उपक्रमणों पर अपने सीएसआर बजट का कुछ हिस्सा खर्च कर रहा है। वर्ष 2014-15 में टीसीआईएल द्वारा इन गतिविधियों पर 29 लाख रु खर्च किए गए। टीसीआईएल एक परियोजना आधारित संगठन है, अत: निश्चित रूप से टीसीआईएल द्वारा किए जाने वाले सभी उपक्रमण व्यवसाय और परियोजना विकास पर केंद्रित होते हैं।

3. कौशल निर्माण

राष्ट्र निर्माण और डिजिटल इंडिया मिशन के एक भाग के रूप में कौशल विकास और कौशल निर्माण एक बहु-उद्देश्यीय अनिवार्यता है जिसमें दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में ही नहीं बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, एमएसएमई, तेल, गैस, परिवहन इत्यादि अर्थव्यवस्था से जुड़े सभी क्षेत्रों में भी कौशल का विकास किया जाना शामिल है।

टीसीआईएल ने आईसीटी अवसंरचना दूर-चिकित्सा को कार्यान्वित किया है जिसके माध्यम से देश के कोने-कोने तक सीमित विशेषज्ञता और संसाधनों के माध्यम से उच्च स्तरीय शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। टीसीआईएल ने डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की स्वप्निल परियोजना यानि पैन-अफ्रीकी परियोजना को कार्यान्वित किया है जिसके माध्यम से टीसीआईएल अफ्रीका के 48 देशों में भारतीय विश्वविद्यालयों और अस्पतालों से

दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा जैसी सुविधाएं प्रदान कर रहा है। पैन अफ्रीकी परियोजना सरकार द्वारा शुरू किए गए बहुमूल्य डिजिटल इंडिया और कौशल विकास के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्थानों से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा और मद्रास विश्वविद्यालय की वर्चुअल विश्वविद्यालय परियोजना के लिए इस नेटवर्क को सार्क देशों हेतु भी सफलतापूर्वक अपनाया जा चुका है।

टीसीआईएल ने भारत में दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा नेटवर्कों के विकास हेतु संचार मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के समक्ष भी इसी प्रकार के प्रस्ताव रखे हैं।

ये नेटवर्क कौशल विकास की संपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक समान अवसंरचना के रूप में कार्य करेंगे।

अपने व्यावसायिक परिचालनों के अंश के तौर पर टीसीआईएल ने दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी विकास को सक्षम करने हेतु एएलटीटीसी और एनआईईएलआईटी के साथ समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

4. डिजिटल इंडिया

दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी, परिवहन, स्वास्थ्य, तेल और गैस, एमएसएमई इत्यादि क्षेत्रों में कार्य करने के लिए पूरी तरह से सक्षम है। अपने व्यापक अनुभव के साथ टीसीआईएल डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में अपना योगदान देते हुए निम्नलिखित सेवाओं में योगदान दे रहा है

- ✦ टर्नकी परियोजनाएं, परामर्शी,
- ✦ साध्यता अध्ययन,
- ✦ नियोजन,
- ✦ डिजाइन,
- ✦ इंजिनियरिंग
- ✦ निष्पादन,
- ✦ गुणवत्ता आश्वासन,
- ✦ लेंडर इंजिनियरिंग,
- ✦ तृतीय पक्ष लेखापरीक्षा,
- ✦ परियोजना प्रबंधन,
- ✦ क्षमता निर्माण,
- ✦ दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में परिचालन एवं रखरखाव
- ✦ वायर्ड लाइन परियोजनाएं - ऑप्टिकल फ़ाइबर नेटवर्क; एफटीएच, ओपीजीडब्ल्यू, सबमरीन केबल,
- ✦ वायरलेस परियोजनाएं - मोबाइल संचार, टेट्रा, 3जी, 4जी, ईएमएफ लेखापरीक्षा
- ✦ सूचना प्रौद्योगिकी परियोजनाएं - ब्रॉडबैंड नेटवर्क, डेटा केंद्र, ई-नेटवर्क्स, दूर-शिक्षा, दूर-चिकित्सा, ई-अभिशासन, सुरक्षा और सर्वेक्षण, आपदा प्रबंधन, आईपीवी6
- ✦ प्रबंधित सेवाएं - सह-स्थान सेवाएं, ई-प्रापण, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, प्रमाणन सेवा,
- ✦ सिविल एवं वास्तुकला परियोजनाएं - साइबर पार्क्स, भवन एवं सड़क निर्माण
- ✦ नए उपक्रमण जिसमें सौर ऊर्जा, ई-कचरा प्रबंधन, पॉवर लाइन परियोजनाएं नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व

टीसीआईएल डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से संबंधित और राष्ट्रीय महत्व की कई परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर चुका है और कई परियोजनाएं पूरी होने के चरण में हैं। इन परियोजनाओं में प्रमुख हैं

- ✦ बीएसएनएल के लिए रक्षा (सेवा) की स्पैक्ट्रम ओएफसी परियोजना हेतु नेटवर्क जिसके तहत अनुमानित 950 कि.मी की ओएफसी केबल बिछाई जानी है,
- ✦ बीएसएनएल के लिए रक्षा (नेवी) की ओएफसी परियोजना जिसके तहत अनुमानित 300 कि. मी. ओएफसी केबल बिछाई जानी है,
- ✦ डाक विभाग ग्रामीण हार्डवेयर परियोजना का कार्यान्वयन जिसके तहत डाक विभाग के 1,29, 000 से भी अधिक अतिरिक्त विभागीय कार्यालयों में हैंडहेल्ड उपकरणों की आपूर्ति करते हुए डिजिटल कनेक्टिविटी का प्रसार किया जाना है।
- ✦ सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा हेतु

उत्तर प्रदेश, ओडीशा और दिल्ली के 320 से भी अधिक स्कूलों में सूचना प्रौद्योगिकी अवंसरचना प्रदान करना,

- कानपुर, गाज़ियाबाद और इलाहाबाद में 10 पुलिस स्टेशनो में ई-अभिशासन परियोजनाओं का कार्यान्वयन,

- आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और मेघालय में अपराध और अपराध ट्रैकिंग प्रणाली की स्थापना

- उपर्युक्त के आलावा, टीसीआईएल ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा परियोजनाओं में सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है।

- टीसीआईएल पूरे अफ्रीका में भारतीय विश्वविद्यालयों और अस्पतालों से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए बहुप्रतिष्ठित पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना का कार्यान्यिन कर रहा है।

टीसीआईएल की उपलब्धियां

इस वर्ष और बीते वर्ष के दौरान टीसीआईएल ने विभिन्न परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया और बहुत सी परियोजनाओं के कार्य आदेशों के लिए स्वयं को सिद्ध किया। उत्तर-पूर्वी राज्यों असम, त्रिपुरा, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के गांव और हिमालय की शृंखला के अंतर्गत आने वाले राज्य जैसे जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड के सीमावर्ती गांव तथा भारत की पश्चिमी सीमा से सटे गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब के दूरस्थ राज्य और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के बहुत से छोटे-छोटे गांव और सुदूर क्षेत्र आज भी मोबाईल संपर्क से अछूते हैं। देश के इन इलाकों को मोबाईल नेटवर्क के साथ जोड़ने के लिए यू एस एफ ओ और दूरसंचार विभाग ने टीसीआईएल को इस संबध में विस्तृत परियोजना विवरण (डी पी आर) तैयार करने का कार्य सौंपा था। टीसीआईएल ने डी पी आर के साथ-साथ तकनीकी अध्यायों को भी निविदा दस्तावेजों के साथ सम्मिलित कर यू एस एफ ओ के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर और चेन्नई के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए सबमरीन केबल डालने के लिए स्टेशन और समुद्र तट के मैनहोलों की पहचान का कार्य, नेटवर्क की वास्तुकला व प्रणाली की रूपरेखा और उसका माप तथा प्रणाली की उपयोगी वस्तुएं व उनकी संख्या (बिल ऑफ क्वांटिटी), पूंजी खर्च व परिचालन खर्च के आकलन का कार्य टीसीआईएल ने किया।

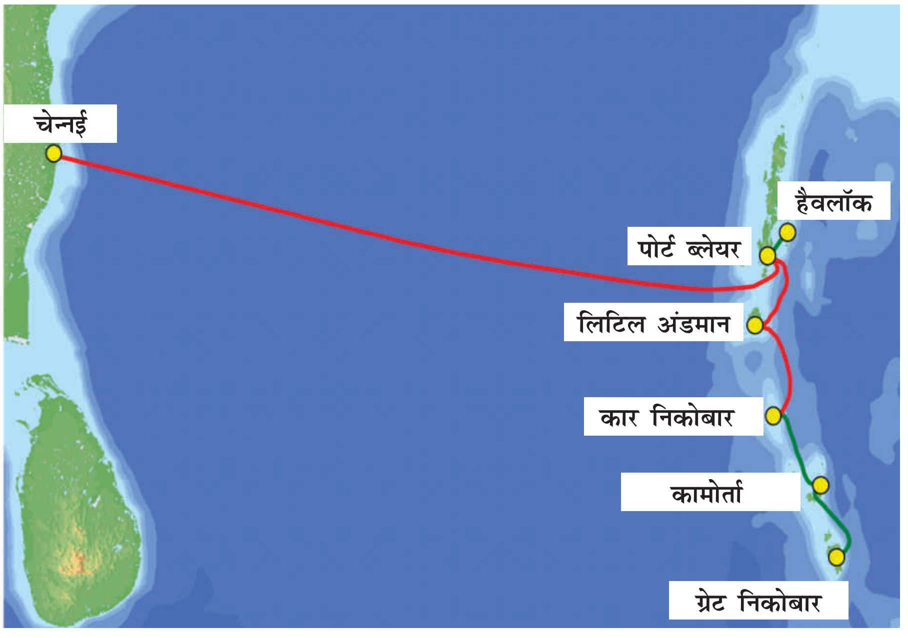

टीसीआईएल में हिंदी पखवाड़ा -2015
पुरस्कार वितरण समारोह

निबंध व आलेख प्रतियोगिता में सुश्री अमरजीत कौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में श्री सत्यनारायण ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री शिवेन्द्र सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

निबंध व आलेख प्रतियोगिता में श्रीमती किरण वकाडीकर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में श्रीमती झूमा चक्रवर्ती ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री शशांत देखमुख ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में श्रीमती संतोष खुराना, श्रीमती नीना महाजन, श्री वी. के. पांडे और श्री गौरव सिंह चौहान के समूह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में श्री अशोक कुमार, श्री नरेन्द्र तलवार, श्रीमती झूमा चक्रवर्ती, श्रीमती किरण वकाडीकर और श्री समीर सिंह के समूह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अध्यक्ष महोदय अपने उदगार प्रकट करते हुए।

हिन्दी अधिकारी हिन्दी पखवाड़े के महत्व पर प्रकाश डालते हुए।

पुरस्कार वितरण समारोह मे उपस्थित टीसीआईएल परिवार के सदस्य।

निदेशक (तकनीकी) श्री राजेश कपूर के साथ टीसीआईएल अधिकारी एवं कर्मचारी।

टीसीआईएल में सेवानिवृत्त तथा नए शामिल हुए कर्मचारियों की सूचना

जुलाई से लेकर सितंबर माह के दौरान टीसीआईएल से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

श्री एन.सी.गोगना	संयुक्त महाप्रबंधक	31.07.2015
श्री प्रेम सिंह	वरिष्ठ पर्यवेक्षक	31.07.2015
श्रीमती उषा दत्ता	वरिष्ठ प्रबंधक	31.07.2015
श्री जसविंदर सिंह	वरिष्ठ पर्यवेक्षक	31.07.2015

जुलाई से लेकर अक्टूबर माह के दौरान टीसीआईएल में शामिल हुए नए अधिकारी एवं कर्मचारी

श्री जग प्रवेश	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री शमशेर सिंह	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री शंकर कुमार ठाकुर	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री अशोक कुमार	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री जंगेश्वर मोहंती	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री मनोज कुमार	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री महेन्द्र प्रसाद	एसीटी- IV	27.07.2015
श्री शिव शंकर कटकूरी	अभियंता	05.08.2015
रितु अग्रवाल	लेखा अधिकारी	16.09.2015
सुशील कुमार	प्रबंधक	21.09.2015
सुभाष चंद्र सत्यम	लेखा अधिकारी	23.09.2015
एस. नूरुद्दीन	एसीटी-4	27.09.2015
रंजीत कुमार समल	लेखा अधिकारी	01.10.2015
वरुण चोपड़ा	लेखा अधिकारी	01.10.2015
आशा कुमारी	लेखा अधिकारी	05.10.2015

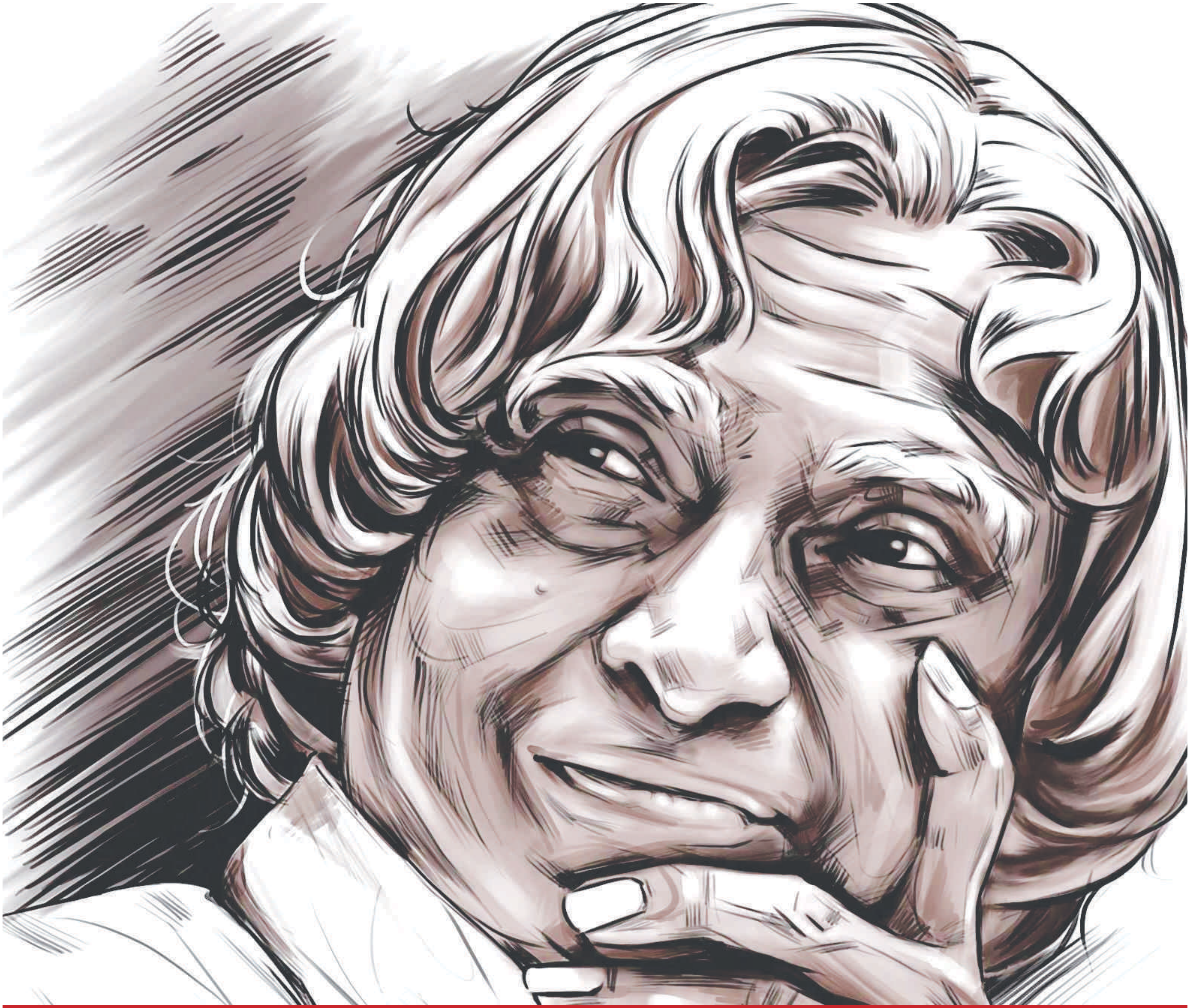

मुझे लगता है कि हमें देश के लिए एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता है, ठीक वैसा ही दृष्टिकोण जैसा अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम के समय हमारा था। उस समय राष्ट्रवाद की भावना बहुत प्रबल थी। भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए आवश्यक यह दृष्टिकोण एक बार फिर राष्ट्रवाद की भावना को शीर्ष पर ले जाएगा।

- डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम
1931-2015